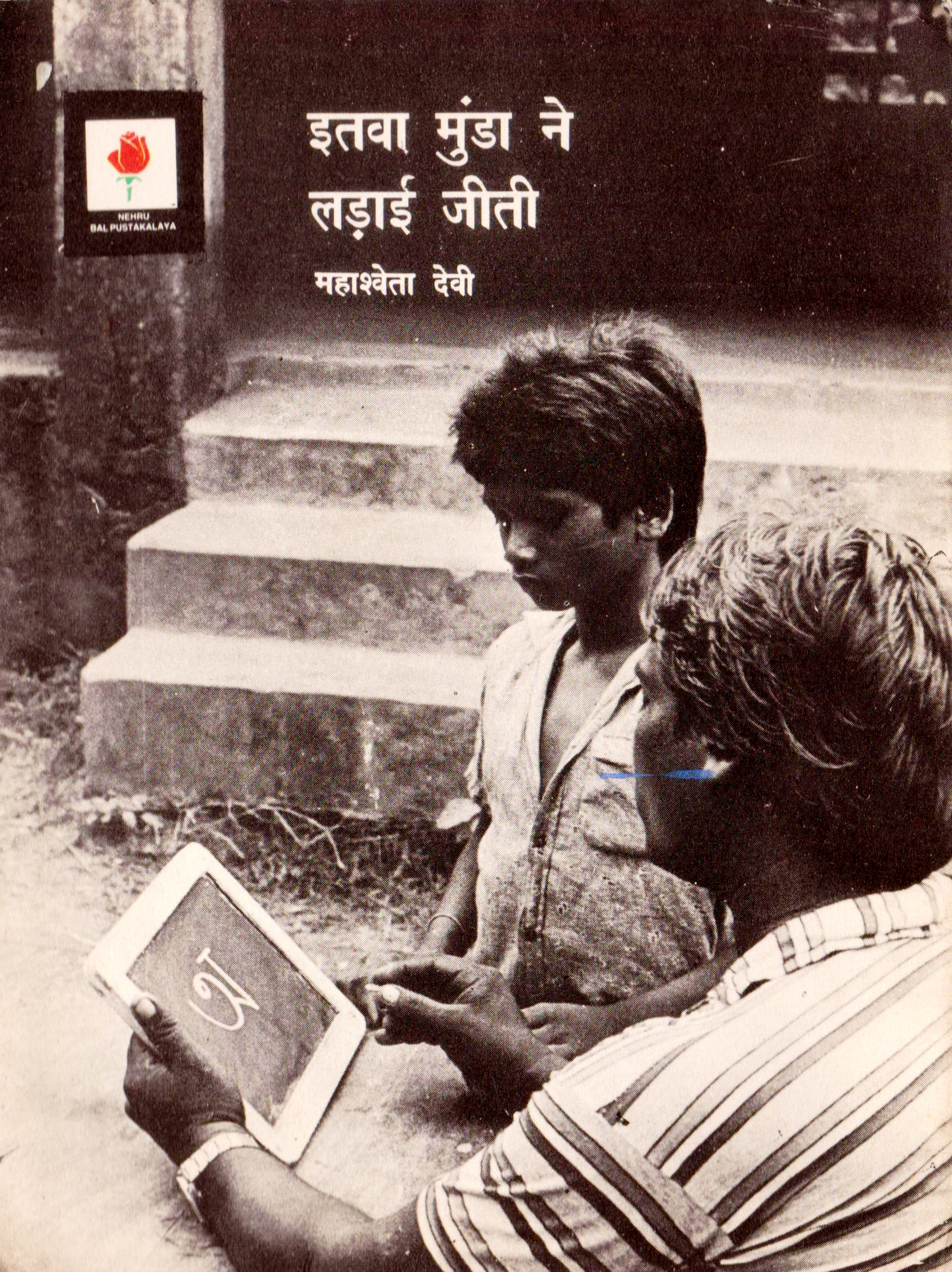
NEHRU BAL PUSTAKALAYA

इतवा मुंडा ने लड़ाई जीती

महाश्वेता देवी



ISBN 81-237-0529-8

पहला संस्करण : 1993

छठी आवृत्ति : 2005 *(शक 1926)*

Etowa Munda Won the Battle *(Hindi)*

रु. 13.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित



नेहरू बाल पुस्तकालय

इतवा मुंडा ने लड़ाई जीती

(आदिवासी जीवन की कहानी)

महाश्वेता देवी

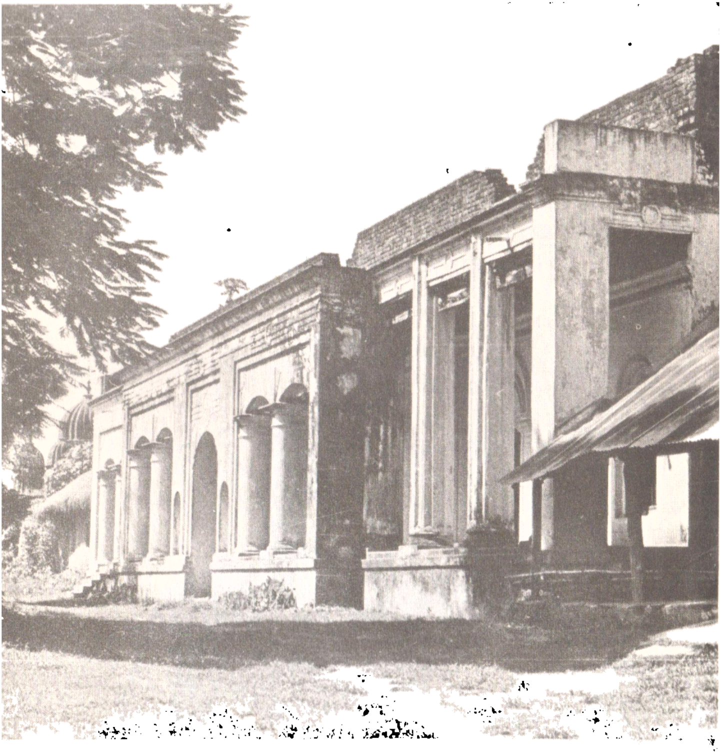
अनुवाद

गोविंद सिंह

चित्र

रविकांत द्विवेदी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



1

ग्राम — हाथीघर। माना कभी यहां हाथी रहते होंगे लेकिन आज मुश्किल से कोई हाथी दिखाई देगा। वह भी क्या जमाना रहा होगा जब मोती बाबू के पुरखे यहां के नामी जमींदार थे। पत्थरों से बनी पशुशाला में उनके हाथी रहा करते थे। पत्थरों से बनी तीस कमरों वाली उस हवेली के अवशेष आज भी बाकी हैं। निचली मंजिल के कमरों में आज चावल, गेहूं आदि अनाजों के गोदाम हैं। हाथीशाला को ऊंचा करके धान रखने का गोदाम बना दिया गया है।

इतवा के दादा बताते हैं किसी जमाने में यह आदिवासियों का गांव था। तब इसे सालगड़िया कहते थे। साल के पेड़ों की कतारें ऐसी शोभायमान लगतीं थीं जैसे कि कतार में खड़े संतरी गांव का पहरा दे रहे हों।

"गांव का नाम क्यों बदल गया?"

"बाबू लोग आये और सब कुछ ले गये।"

"क्या आदिवासियों ने रोका नहीं?"

"तुम बहुत बोलते हो इतवा! इतने सवाल पूछने की हिम्मत तो तुम्हारे पिताजी की भी नहीं होती थी। हम सब कुछ हार गये क्योंकि पढ़ना लिखना तो हम जानते ही नहीं थे। सरकार के कायदे कानून तो हमारी समझ में आते ही नहीं थे।"

"बाबा, सिर्फ एक बात और बता दो, यहां आने के लिए आप लोगों ने अपनी जमीन कब छोड़ी?"

"हजारों चंद्रमा पहले .... तुम हंसते क्यों हो?"

"भला चंद्रमा से भी कोई साल की गिनती करता है?"

"हम हमेशा से ऐसा ही करते रहे हैं और मैं तो जब तक जियूंगा, ऐसा ही करूंगा। जब सिधू और कान्हू ने अंग्रेजों के खिलाफ संथालों की लड़ाई का नेतृत्व किया, तभी हमारे पूर्वजों को भी अपनी जमीन छोड़नी पड़ी। क्या जोरदार लड़ाई थी वह! अंग्रेज जीत गये, तो संथाल इधर उधर बिखर गये। उनमें से कुछ लोग यहां पहुंचे। जंगल काटकर वे यहां बस गये। बहुत समय पुरानी बात है यह।"

"तो क्या इसी कारण हम मुंडा लोग यहां आये ?"

बूढ़े मंगल ने अपने पोते की तरफ देखा। मन ही मन सोचने लगा —यह बच्चा है। अभी क्या जानता है? भला कोई आदिवासी भी अपनी धरती छोड़ सकता है? बहुत मजबूर होकर ही वह ऐसा करेगा। दादाजी ने कहा, "इसके कुछ साल बाद बिरसा मुंडा अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह भड़काने में सफल हुए। वह भी बड़ी घमासान लड़ाई थी। एक तरफ से बाणों की बौछारें हुईं और दूसरी तरफ से वे गोलियां दागने लगे। आखिर हमें ही हार माननी पड़ी। आंधी आने पर जैसे पत्ते बिखरने लगते हैं, उसी तरह हम लोग भी उड़ीसा, बिहार, बंगाल और असम के विभिन्न भागों में बिखर गये। नयी बस्तियां बसाने के लिए हमने जंगल काटे। इसीलिए मुंडा और संथाल आज हर जगह दिखाई देते हैं।"



"तो इसी प्रकार आप यहां आये?"

"छोटा नागपुर छोड़कर हम चल पड़े। सुवर्णरेखा नदी पार कर जब हम उस पार पहुंचे तो संथालों ने हमें देखा। वे बड़े खुश हुए। जितने ज्यादा आदिवासी होंगे उतनी ही शक्ति बढ़ेगी न! तुमने उस नदी को देखा है, जिसे दुलंग कहते हैं ? हम उसे दारांगढ़ा कहते थे। तब इस इलाके में घने जंगल थे और यहां बहुत से जंगली जानवर रहते थे। ये जो अपने गांव में लोढा जाति के लोग हैं, ये तो सचमुच जंगलों में रहने वाले लोग हैं। ये बाघूत भगवान की पूजा करते हैं ताकि इनके जानवरों को चीता न मार जाय और अपनी सुरक्षा के लिए वे देवी बरम की पूजा करते हैं। हम लोगों ने रहने की जगह बनाने के लिए मिलजुल कर लकड़ियां काटीं, लेकिन हमने कभी जंगल का विनाश नहीं किया। जंगल तो हमारी मां है। लोढा लोग तो आज भी शिकार करके ही जीवन बसर करते हैं"।

"लेकिन दादाजी, बाबू तो कहते हैं कि तुम आदिवासियों ने ही जंगल का विनाश किया है!"

"यह सच नहीं है। अब तो बहुत थोड़ा जंगल बच गया है। पर जितना भी है, उससे हमें कंदमूल फल मिलते हैं। पत्ते, ईंधन, खरगोश, सेही और पक्षी मिलते हैं। यह बूढ़ा साल का पेड़ हमारा ग्राम देवता है जिसकी हम पूजा अर्चना करते हैं। जिसे प्यार करते हैं, उसे कौन काटेगा?"

"गांव का नाम हाथीघर क्यों पड़ा?"

"जब हमने जंगल काट कर बस्ती बसायी, खेत बनाये तो उपजाऊ धरती मुस्कुराने लगी। और तब आये बाबू लोग। हमेशा ऐसा ही होता है। हम लोग अनपढ़ थे, इसलिए अपनी जमीन खो बैठे। उन्होंने गांव का नया नाम रखा। जाने दो इतवा, बहुत हुआ। तुझे क्यों हो रही है इतनी उत्सुकता?"

इतवा कैसे बताये! हर रोज बाबू के घर जाते हुए जब वह प्राथमिक स्कूल की झोंपड़ी से होते हुए गुजरता है तो संथाल स्कूल मास्टर बच्चों को बड़ी मजेदार कहानियां सुना रहे होते हैं। मास्टरजी अपनी कक्षा की शुरूआत हमेशा कहानियों से ही करते हैं, कि .... "तब हवा में उनके बाणों की बौछार शुरू हुई। आकाश में अंधेरा छा गया। उस घमासान लड़ाई का वर्णन कर पाना मेरे बस की बात कहां"?

इतवा को नहीं मालूम कि मास्टर किस लड़ाई की कहानी सुनाते हैं! कहीं वह महाभारत की लड़ाई तो नहीं या कि रामायण की! इतवा ने रोहिणी गांव में जात्रा देखी थी। जात्रा के नाटकों द्वारा ही उसे रामायण और महाभारत की कहानियों का पता चला।

इतवा के कानों में स्कूल मास्टर की आवाज घंटी की तरह गूंजती रहती है। गांव के प्रधान मोती बाबू के घर वह काम करता है। मोती बाबू भगवान की तरह पूजे जाते हैं। इतवा उनकी गायों-बकरियों को चराने जंगल ले जाता है।

* * *

हाथीघर कलकत्ता से सचमुच बड़ी दूर है। हावड़ा से खड़गपुर के लिए रेल पकड़िये, खड़गपुर से बस लीजिये और गुप्तमणि मंदिर के सामने उतरिये। वहां रक्षा की देवी बरम की पूजा होती है तथा लोढा जनजाति का पुजारी वहां रहता है। मुंबई मार्ग पर चलने वाले सब ट्रक और बसें दर्शनों के लिए गुप्तमणि मंदिर रुकते हैं। गुप्तमणि से रोहिणी के लिए बसें जाती तो हैं, पर बहुत कम। यदि आप वहां से दक्षिण पश्चिम दिशा में पैदल चलें तो सात आठ मील के बाद आपको एक नाला पार करना पड़ेगा और उसके बाद छोटे छोटे आदिवासी गांवों का झुंड सा शुरू हो जायेगा। इसके बाद विशाल रोहिणी गांव से होते हुए दक्षिण की ओर दुलंग नदी के किनारे किनारे चलिए, नदी





आपके साथ साथ नाचती बलखाती सी चलेगी और तब आपको एक ऊंचा साल का पेड़ दिखाई देगा। पेड़ भी इतना ऊंचा कि जैसे आसमान को छूना चाहता हो। इसके साथ ही एक अर्जुन का पेड़ है। तब समझो कि आप हाथीघर पहुंच चुके हैं।

इन पेड़ों की जड़ों के पास आपको मिलेंगी मिट्टी से बनी हाथी और घोड़े की दो विशाल मूर्तियां। जड़ों के आसपास इनकी और भी कई छोटी छोटी मूर्तियां मिलेंगी। गांव का हर निवासी, वह चाहे आदिवासी हो या नहीं, यहां गरम देवता की पूजा अर्चना के लिए जरूर आता है।

यहां से कुछ दूरी पर दुलंग नदी सुवर्णरेखा में मिल जाती है । इन दोनों के संगम स्थल की छटा भी देखते ही बनती है । लगता है जैसे समुद्र ने गेरुए वस्त्र पहन लिये हों । आप चाहें तो यहां एक डुबकी लगा सकते हैं । आप डूबेंगे नहीं । यद्यपि धारा का बहाव काफी तेज है लेकिन पानी कमर तक ही होगा । अपनी प्रिय भैंस की पीठ पर चढ़कर इतवा अक्सर यहां से नदी पार करता है।

आखिर इतवा करता क्या है? वह गायों, भैंसों व बकरियों को चराने ले जाता है । लोग उसे इतवा क्यों कहते हैं? उसके नाम के पीछे भी आदिवासियों की विशेष परंपरा है। वह इतवार के दिन पैदा हुआ, सो उसका नाम इतवा पड़ गया। यदि वह सोमवार को पैदा हुआ होता तो उसका नाम सोमरा या सोमई रखा जाता। आदिवासी समाज में प्रायः जन्म के दिनों के नाम पर नाम रखे जाते हैं। जो लोग अपने बच्चों के बंगाली नाम रखना चाहते हैं, वे वैसा ही करते हैं। इतवा का नाम उसके दादाजी मंगल मुंडा ने रखा । इस राज्य में रहने वाले मुंडा, लोढा और संथाल आदिवासी यद्यपि बंगला जानते हैं किंतु अपनी भाषाएं भी बोलते हैं।

इतवा हमेशा हिरन की तरह कुलांचे भरने को तैयार रहता है । उसकी उम्र सिर्फ दस वर्ष होगी। सिर में लाल, भूरे बालों की जुल्फें। जगमग चमकती आंखे । पहनने के नाम पर हमेशा खाकी नेकर। उसके दादाजी बहुत बूढ़े हो चुके हैं। उम्र का छोटा होते हुए भी जिदंगी के कई मुश्किल पाठ पढ़े हैं इतवा ने। ईंधन के लिए जंगल से लकड़ी, पत्ते इकट्ठे करता है वह। इसलिए हर गिरती हुई टहनी का, सूखते हुए पत्तों का उसे ध्यान रखना पड़ता है।





गांव में एक दिन साप्ताहिक बाजार लगता है । इतवा दुकानों के आगे झाड़ू लगाता है, बदले में दुकानदारों ने उसे टाट का एक बोरा दे दिया है । वह इस बोरे को हमेशा अपने पास रखता है । आम के बूढ़े वृक्ष की छाया में अपनी गायें चराते समय, वह जमीन पर गिरी हुई अंबियां उठाता है । लकड़ियों के टुकड़े भी इकट्ठे करता है । कंदमूल फल खोदता है और दलदल भरे तालाब से हरी तरकारियों की बेलें खींचता है । और ये सब चीजें अपने बोरे में भरता रहता है ।

तब वह दुलंग के उस पार हरे भरे घास वाले तट को पार करता है । जानवरों को चरते छोड़ वह एक संकरे से नाले से सुवर्णरिखा की तरफ दौडता है । तब वहां खपची से अपना मछली पकड़ने का जाल फेंकता है । ऐसे अवसरों पर वह खुद को किसी राजा से कम नहीं समझता । नदी, आकाश और हरे भरे खेतों का राजा । वह अपने आपसे कहता है, "यदि भाग्य ने साथ दिया तो आज जरूर मछली खाएंगे । वरना तरकारियां तो हैं ही । दुकानदार से तेल, नमक और मसाले लेने के लिए कंद उसे दे देना पड़ेगा । वह नहीं माना तो दादा जी और मैं ही इसे भी खा लेंगे" ।

खाने की चीज की बात मन में आते ही इतवा की भूख छू मंतर हो जाती है । मस्ती

में झूमता इतवा कभी नदी के जल से बातें करता है तो कभी सरकंडे की सफेद बालों से, तो कभी फूलों से और चौड़े आसमान से बोलता है, "क्या तुम उस लड़ाई के बारे में जानते हो? क्या जोरदार लड़ाई थी वह —एक तरफ से बाणों की बौछारें तो दूसरी तरफ से तोपों की गर्जनाओं और घोड़ों की टापों की खड़खड़ाहट से आसमान गूंज उठता था।"

स्कूल मास्टर अपने विद्यार्थियों को जिस लड़ाई की कहानी बताते हैं, वह कौन सी थी, इतवा को नहीं मालूम। कहीं यह **1857-58** का युद्ध तो नहीं था। या यह कोई और लड़ाई थी, जब बाणों को तोप के गोलों से भिड़ना पड़ा था। मास्टरजी रोज नयी नयी लड़ाइयों के बारे में बताते हैं। इतवा कुछ नहीं जानता। वह जानने की परवाह भी नहीं करता। उसे लड़ाई से मतलब है, बाकी बातों में उसे दिलचस्पी नहीं। खुले आसमान





के नीचे घास के मैदान में अकेला खड़ा इतवा उस लड़ाई के बारे में न जाने क्या क्या बोलता जाता है, जो वाकई बहुत घमासान रही होगी। लेकिन घास में भनभनाते कीड़ों, हवा में झूलते वनफूलों और गायों के झुंड में कोई भी नहीं जानता कि इतवा क्या बोल रहा है। बेचारे आदिवासी ग्वाले की बातों को गंभीरता से कौन सुनता है? दुलंग और सुवर्णरिखा मुस्कुराती हुई बहती हैं। हालांकि कहा तो यही जाता है कि इन्हीं नदियों के तटों पर उस घमासान लड़ाई की आग धधकी थी।

इतवा को इन कहानियों पर विश्वास नहीं होता। बूढ़े लोढ़ा भजन भुक्त की सुनाई हुई कहानियों पर उसे ज्यादा विश्वास होता है। भजन बताता है कि कभी यहां शक्तिशाली आदिवासी राजा का राज था। जब बाहरी लोगों ने यहां आकर उसका राज्य छीन लिया तो राजा अपना तांबे का घंटा और जादुई छड़ी लेकर दुलंग में कूद गया। आज भी यदि आप सच्चे मन से राजा को फरियाद करें तो राजा पानी के भीतर से ही अपना घंटा बजाता है और अपनी जादुई छड़ी के साथ हाथी पर सवार होकर पानी की सतह पर आता है।



शेर की तरह दहाड़ते हुए आकाश को कंपित करके वह पूछता है, "मुझे कौन बुला रहा है? मेरे सिपाही कहां हैं? मुझे अपना राज्य वापस लेने के लिए अभी और कितना इंतजार करना होगा। इस धरती को मैं वनों से ढंका हुआ, जंगली जानवरों और वनवासियों से भरा हुआ कब देख पाऊंगा"? ऐसा कहने के बाद वह अपनी घंटी बजाता है। किसी भी तूफानी रात को उसे सुना जा सकता है।

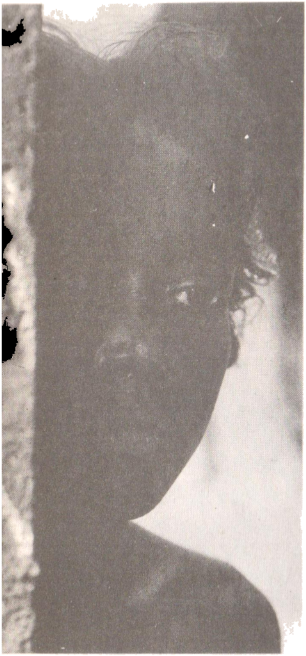
भजन भुक्त अंधा है। जब भी बाजार लगता है, वह बीच बाजार में बैठकर गाता है और कहानियां सुनाता है। घर लौटते हुए इतवा अकसर उसे सहारा देता है। इतवा कहता है, "दादाजी, आज आपने कितनी मजेदार कहानियां सुनायीं। हर आदमी बहुत ध्यान से सुन रहा था। देखो न, आपको दस्सी के कितने सिक्के मिले हैं"।

"इतवा, तुम बहुत अच्छे लड़के हो। मुझे बस एक ही दुख है कि तुम स्कूल नहीं जाते हो। हमारे बच्चे स्कूल नहीं जाते। जायें भी कैसे! हम लोग उन्हें गायें चराने या लकड़ी इकट्ठी करने के लिए बंधुवा जो बना देते हैं। अब तो हमारे गांव में भी स्कूल बन गया है। संथाल स्कूल मास्टर तो बहुत ही अच्छा है। वह घर घर जाकर बच्चों को स्कूल भेजने को कहता है। हमारे लड़के लड़कियों को जरूर पढ़ना सीखना चाहिए, पर क्या करें, हम तो अपने पेट की पहले सोचते हैं। जब मैं छोटा था, तो स्कूल जाने के लिए चार मील का जंगल पार करना पड़ता था। आज तो हर गांव में स्कूल है। फिर भी.___.अच्छा बेटा, अब घर जाओ। अब यहां से मैं खुद ही चला जाऊंगा।"

इतवा दिन भर क्या करता है? सूर्य देवता की तरह इतवा के पास एक क्षण भी फुर्सत के लिए कहां? वह और उसके दादाजी एक टूटी फूटी झोंपड़ी में रहते हैं। उसके मां बाप तो बचपन में ही चल बसे। इसलिए दादाजी ही उसके लिए मां भी हैं और पिताजी भी। अपने पिताजी के बोये हुए कटहल के पेड़ की एक टहनी से वह अपनी दो बकरियों को बांधा करता है।

उसका सबसे अच्छा दोस्त है रतन टुडू। वह संथाल है। अपनी बकरियों के साथ इतवा की इन दो बकरियों को भी वह चराने ले जाता है।





अपनी झोंपड़ी के भीतर वे बांस की ऊंची चौकी पर सोते हैं। भोर होते ही मंगल घर से निकल जाता है। सवेरे जागने के बाद इतवा पिछली शाम से बचे बासी भात का कलेवा करता है। कुछ भात अपने दादाजी के लिए रख दिया करता है। उसके बाद वह मोती बाबू के घर की ओर दौड़ पड़ता है। वहां उसका इंतजार कर रहा होता है — ढेर सारा काम।

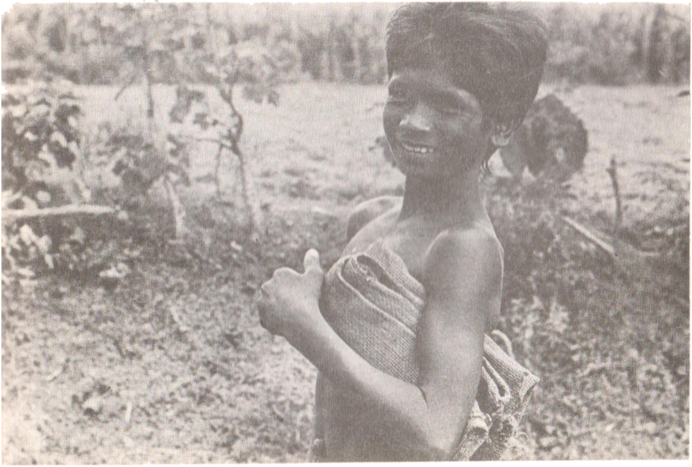
सबसे पहले वह अंदर के बहुत बड़े अहाते में झाड़ू लगाता है। उसके बाद उसे ट्यूबवेल से पानी निकालना होता है और तब मकान के पास ही तरकारियों के खेत में उसे पानी देना होता है। घर का काम काज खत्म करके वह गौशाला जाता है। हर गाय और भैंस को वह नाम ले लेकर पुकारेगा और फिर इन्हें ले जायेगा जंगल चराने।

मवेशियों को चराने ले जाते हुए वह हर रोज कुछ देर के लिए स्कूल के पास रुक जाता है, मास्टरजी की कहानियां सुनने के लिए। मास्टरजी कहते, "एक तरफ तोपें और आधुनिक बंदूकें थीं, और दूसरी तरफ थीं तलवारें और पुराने किस्म की बंदूकें। हमारे सिपाहियों ने अद्‌भुत साहस दिखाया। आखिर में जीते तो अंग्रेज ही। लेकिन इसका मुख्य कारण था, उनके बढ़िया किस्म के हथियार और अनुशासित फौज। हमारे सिपाहियों के पास थी सिर्फ उनकी देशभक्ति और बहादुरी। तब भी यह लड़ाई ऐसी थी जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

वास्तव में वह लड़ाई बहुत ही जबर्दस्त थी"।

इतवा भी रोज एक लड़ाई लड़ रहा है। अपने टाट के बोरे को भरने की लड़ाई। पर इस लड़ाई से वह पूरी तरह से अनभिज्ञ है। बड़ी हिफाजत से अपने बोरे को दुलंग में धोता है। बरसात के मौसम में यही बोरा उसके लिए बरसाती [illegible] का करता है और जाड़ों में कंबल का। वैसे सर्दियों के लिए उनके पास एक गुदड़ी भी है। गानोर के साप्ताहिक बाजार से फटे पुराने कपड़े खरीद कर उसके दादाजी ने यह गुदड़ी तैयार की है। रात को सोते समय इतवा इस गुदड़ी को अपने दादाजी को दे देता है। दादाजी बूढ़े हैं और उन्हें ठंड भी तो ज्यादा लगती है। इतवा का गुजारा तो बोरे से भी हो जाता है।

यह कितने दुख की बात है कि गांव में स्कूल होते हुए भी इतवा पढ़ नहीं पाया, हालांकि उसके दादाजी चाहते थे कि वह कुछ पढ़ ले।



इतवा का जन्म बांधना या सोहराई त्यौहार के दिन हुआ था। यह त्यौहार अकसर दीपावली के बाद पड़ता है। हाथीघर में आदिवासी और अन्य लोग शांतिपूर्वक रहते हैं। वे दुर्गापूजा और कालीपूजा मनाते हैं और जात्रा के नाटकों का आनंद लेते हैं। लेकिन आदिवासियों की अपनी जात्रा मंडलियां हैं और वे अपनी जात्राओं को संथाली या मुंडारी भाषाओं में खेलना पसंद करते हैं। सारे कलाकार आपस में दोस्त होते हैं और भाषा को अच्छी तरह समझते हैं।

बांधना के दिन बाघूत भगवान की पूजा की जाती है। बाघूत भगवान को जानवरों का रक्षक समझा जाता है। हालांकि आज मुश्किल से कोई शेर मिलेगा, लेकिन कहा जाता है कि कभी आदिवासियों के ढेर सारे जानवर शेर का शिकार बनते थे। बाघूत ही शेर



से उनकी रक्षा करता था। देवता की प्रतिमा के सामने सिंदूर में रंगे कुछ पत्ते रखे जाते हैं और हर किसी को अपनी अपनी गाय पूजा स्थल पर लाने को कहा जाता है। जो भी गाय सबसे पहले सिंदूरी पत्ते को खाती है, उसे बहुत पवित्र समझा जाता है। उसके सींगों पर तेल और सिंदूर का लेप किया जाता है। लोग इस गाय के मालिक के पास इकट्ठे होते हैं। गाय का मालिक सभी आदिवासियों को दावत देता है।

रात के समय लोग ढोल बजाते हुए गौशाला के पास जाते हैं। गाय की तारीफ में गाने गाते हैं। गाय उनके लिए सब से प्रिय दोस्त है।

इतवा अक्सर इस गायक मंडली में शरीक होकर गीत गाता है।

जागो, जागो, मां भगवती जागो
जागो, जागो, मां भगवती जागो!
जागो रे जागो, पड़ेवा की इस रात को जागो।

गायों के मालिक गायन मंडली को रुपए पैसे देते हैं। बाद में इनाम की इस रकम को भी एक दावत में खर्च कर दिया जाता है।

दूसरे दिन औरतें गौशाला की सफाई करती हैं। घरों और फर्शों की मिट्टी से लिपाई करती हैं और सफेद रंग की मिट्टी से अल्पना बनाती हैं। इस अवसर पर गाय के खुरों का डिजाइन बनाना बहुत जरूरी होता है। उसके बाद तीन प्रमुख ईष्ट देवताओं— बुड़ू बोंगा, हारम बूढ़ी और धरम की पूजा की जाती है और एक लाल मुर्गे, एक एक काली और सफेद मुर्गी की बलि दी जाती है। पूजा के बाद दावत होती है। एक बार फिर औरतें तेल और सिंदूर गायों के सींगों पर लगाती हैं। फिर गायों को खेतों में ले जाया जाता है।

अगले दिन सभी गायों व भैंसों को एक अहाते में रस्सियों से बांधकर, सभी आदिवासी उनके चारों तरफ नाचते गाते हैं।

इस तरह इतवा के गांव में बांधना का उत्सव मनाया जाता है। कुछ दूसरे गांवों के आदिवासी हालांकि बाघूत को नहीं मानते लेकिन इस दिन किसी अन्य देवता की पूजा करते हैं। कुछ वर्गों में बांधना का त्यौहार लगातार पांच दिनों तक मनाया जाता है तो कुछ लोग तीन दिनों तक मनाते हैं। जिनके पास गायें नहीं होतीं वे भी त्यौहार में हिस्सा लेते हैं।

इतवा का जन्म भी इसी त्यौहार के दौरान हुआ था। लोगों ने कहा था यह बच्चा बड़ा भाग्यवान है, जिंदगी में कोई बड़ा काम करेगा। नामकरण तो परंपरा के अनुसार ही किया गया। पानी से भरा कलश ग्राम देवता के नाम पर धान की बाल और घास के साथ नदी में प्रवाहित किया गया। चुपके से 'मंगल' बोल कर धान की एक और बाल प्रवाहित की गयी। दरअसल उत्सव के दौरान पैदा होने वाला बच्चा लड़का हो तो परंपरा के अनुसार दादाजी का नाम लेना होता है। यदि यह दूसरी बाल धास को छू लेती है तो बच्चे का नाम मंगरा या मंगला रखा जाता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसके पिताजी तो चाहते थे कि उसे कोई बंगाली नाम दिया जाय लेकिन दादाजी नहीं माने। उनका कहना था कि वह इतवार को पैदा हुआ है, इसलिए उसका नाम इतवा रखा जाय।

जब वह छह महीने का था तब उसका तुकुई लुत्र संस्कार करके कान छेदे गये। (आदिवासी लोग अन्नप्राशन नहीं मनाते) तुकुई लुत्र के दिन अहाते में धान बिछाये गये और बीचोंबीच एक लकड़ी का तख्ता रख कर इतवा को उस पर लिटा दिया गया। और तब उसके कानों का छेदन हुआ। अतिथियों को गुड़ भात खिलाया गया। एक काले मुर्गे की बलि दी गयी। दावत के बाद आदिवासी माताएं थोड़ा थोड़ा तेल और एक एक टोकरी धान ले आयीं। तेल इतवा के सिर की मालिश के लिए था और धान बच्चे को उपहार स्वरूप दिये गये।

यद्यपि पूरी बिरादरी को न्यौता दे सकने की हिम्मत मंगल की नहीं थी तथापि आदिवासियों की परंपरा के अनुसार यदि उन्हें कोई दावत पर बुलाता है तो उनका भी यह कर्तव्य बनता है कि वे अपनी तरफ से चावल, दाल या तरकारियां, जो भी हो सके ले जायें।

एक वर्ष की उम्र में ही इतवा के मां - बाप चल बसे। चूंकि माता - पिता दिन भर खेतों में ही काम करते थे, इसलिए मंगल ही एकमात्र सहारा था।

* * *

आदिवासियों का नया साल माघ के महीने में शुरू होता है। इसकी शुरूआत माघ चंदु या माघेसीम उत्सव के साथ होती है। कुंवारियां और नवविवाहित लड़कियां इस अवसर पर बड़े बूढ़ों के चरण धोकर उनका आर्शीवाद लेती हैं।

फसल काटने के मौसम में हाथीघर के संथाल, मुंडा और लोढा आदिवासी कनक

बाबू के खेतों में काम किया करते हैं। कनक बाबू शहर में रहते हैं। धान की फसल काटने के बाद वे अपना हिस्सा अपने घर ले जाते हैं। इस साल कनक बाबू ने अपनी जमीन बिना आदिवासियों को बताए किसी बाहरी व्यक्ति को बेच दी। नये मालिक ने खेत में काम करने के लिए नये मजदूर लगाये। आदिवासियों ने यह बात सपने में भी नहीं सोची थी कि जिस फसल को वे बो रहे हैं, उसे काटने से भी उन्हें वंचित कर दिया जायेगा। उन्हें दैनिक मजदूरी की बजाय अनाज मिला करता था। इस बार उनके हाथों से वह भी छिन गया।

संथाल चंद मुरमू यह देख आपे से बाहर हो गया। वह गुस्से से चिल्लाया, "हमें बिना बताए जमीन कैसे बेच दी गयी? हमने खेती बोयी है और हम ही फसल भी काटेंगे"।

झगड़ा बढ़ गया। पुलिस आयी और हाथीघर के आदिवासियों को पकड़ ले गयी। चंद के पिताजी सुबल और मंगल को जयचंद नामक संथाल वकील को मिलने के लिए 26 मील पैदल चलना पड़ा। सुबल बोला, "जयचंद, तुम्हारे पिताजी और मैं दोस्त थे। तुम्हारे गांव में मेरी बेटी ब्याही है। हमारी मदद कीजिए। पुलिस हिरासत से हमारे लोगों को छुड़ा दीजिए"।

जयचंद भला आदमी था, बड़ी मुश्किल से वह छत्तीसों लोगों को छुड़ा पाया। हालांकि इस काम में उसे कई महीने लग गये। शहर से लौटते समय इतवा के मां - पिताजी ने पता नहीं क्या खाया, जिससे कि उन्हें विषाक्तता हो गयी। वे शहर के अस्पताल में ही चल बसे। चंद मुरमू नन्हें इतवा को घर ले आया और बूढ़े मंगल की गोद में रख सिर झुका कर चुपचाप खड़ा हो गया।

मंगल बोला, "चंद, क्या खाया था उन्होंने"?

"शायद सड़े गले फल या फफूंद लगी मिठाई।"

"वे पैसे कहां से लाए?"

"चाचाजी, हमने सोचा कि खाली हाथ घर लौटने की बजाय कहीं कुछ दिन काम कर लें। वे ईंट के भट्टे में काम कर रहे थे।"

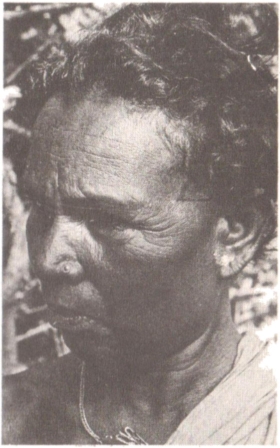
" मैं तो बहुत बूढ़ा हो चुका हूं, चंद बेटे। मैं कैसे पालूंगा इतने छोटे बच्चे को और कैसे हम दोनों का पेट पालूंगा?"

गांव की एक बुजुर्ग औरत आलोमणि ने कहा, "मुझे दे दो भैया इस बच्चे को,

मैं इसकी देखभाल करूंगी"। आलोमणि को पूरा गांव चाची कहता है।

"जाओ, ले जाओ इसे। यह कैसा अभागा बालक है जो अपने मां-बाप को ही खा गया।"

"इसमें इस बालक का क्या दोष है, चाचा" चंद बोला।



आलोमणि बोली, "बोलने दो इसे। मन की भड़ास निकल जायेगी तो कुछ हल्का हो जायेगा। वरना भीतर ही भीतर आग सुलगती रहेगी"।

मंगल दो दिन तक अपने घर पर भावहीन चेहरा लिए पड़ा रहा। तीसरे दिन वह आलोमणि के पास गया। "बच्चा मुझे दे दो। अब मुझे ही इसका पिता और माता बनना है।"

बच्चे को कंधे पर ले वह मोती बाबू के यहां पहुंचा और कुछ काम मांगने लगा। "क्या तुम वह सब काम कर सकते हो जो तुम्हारा बेटा करता था"?

"बाबू, आप तो जानते ही हैं, एक जमाना था जब मैं सब काम कर सकता था। तब तो मेरा लड़का भी स्कूल जाता था।"

"यही तो तुम्हारी गलती थी। यदि तुम लोग ही अपने बच्चों को स्कूल भेजने लगे तो हमारे खेत खलिहानों में काम कौन करेगा? जानवरों को कौन चरायेगा? तुम यह कैसे कह सकते हो कि मैं तुम लोगों को ठगता हूं! मैं तुम लोगों को एक वक्त का खाना और चाय नाश्ता देता हूं। यही नहीं, साल में दो जोड़ी कपड़े भी देता हूं, ऊपर से 74 किलो धान देता हूं। कोई कैसे कह सकता है कि मोती बाबू मजदूरों को ठगते हैं!"

"मैं आपके उपकार कैसे भूल सकता हूं, बाबू जी! मेरी पूरी जिदंगी आपकी सेवा में बीती। इसीलिए मेरी इच्छा थी कि कम से कम मेरा बेटा तो कुछ पढ़ ले।"

"फिर क्यों छुड़वाया स्कूल! पढ़ने देते।"

"मैं कैसे कर पाता बाबूजी, उसकी मां के मर जाने के बाद मैं अकेला पड़ गया था जो कुछ आप देते थे, उससे हम दोनों के पेट का ही पूरा नहीं होता था। मजबूर होकर उसे आपके भाई के यहां ग्वाले की नौकरी पर लगाना पड़ा।"

"सब ईश्वर के हाथ में है मंगल! कौन पढ़ेगा, कौन नहीं, सब भाग्य की बात है!"

"छोड़ो बाबू भाग्य की बातें । आप यह बताइए कि मुझे काम दे रहे हैं या नहीं!"

"तू तो बड़ी खरी खोटी सुनाता है रे मंगल!"

"मैं तो अनपढ़ आदिवासी हूं बाबूजी! मुझे क्या पता कि क्या होती है अच्छी बोली! मेरा लड़का और बहू चल बसे हैं! अब भी तुम सोचते हो कि मैं मीठी बोली बोलूंगा।"

"ओ हो! तो बुरे दिन चल रहे हैं आजकल।" मोती बाबू की मां ने बीच में ही टोका, "मंगल से बात करने का यही तरीका है क्या मोती! यह बुजुर्ग आदमी इज्जतदार आदिवासी है। यह एक बार बोल दे, तो तुम्हारे यहां एक भी आदिवासी न आये"!

"चलो ठीक है। इसे काम दे दो।"

"मुझे बच्चा भी साथ में लाना होगा बाबू जी!"

"तब काम कैसे करोगे!"

" यह मुझ पर छोड़ दीजिए। आपको अपना काम पूरा मिलना चाहिए।"

आदिवासियों में अनाथ बालक का पालन पोषण बिरादरी के लोगों द्वारा किया जाता है। चंद मुरमू की पत्नी बोली, "मैं दो बच्चों को तो पाल ही रही हूं। एक मेरा बेटा सिंगराई है, दूसरा भतीजा है रतन। इतवा मेरे लिए तीसरे बच्चे की तरह होगा। ये तीनों दुधभाई होंगे। आप अपनी उम्र का लिहाज करके इसे मुझे दे दीजिए"।

"मेरे पास इतवा के अलावा और है ही क्या?"

"तब ठीक है, लेकिन जब आपको बाहर जाना पड़े या बाजार जाना पड़े, तब आप इसे मेरे पास छोड़ देना। काम से लौट आने के बाद लिये जाना।"

"चलो ठीक है।"

तब से आज तक इतवा, सिंगराई और रतन बहुत करीबी रहे हैं। छह वर्ष की उम्र से ही तीनों दोस्तों की तिकड़ी बड़ी मशहूर रही है।

* * *

आदिवासियों का एक और मशहूर त्यौहार है—करम पूजा। यह त्यौहार भादों के महीने में खेती की समृद्धि के लिए मनाया जाता है। बारीकी से बुनी हुई बांस की डलियों में मिट्टी भरकर औरतें उनमें विविध अनाजों के बीज बोती हैं। कुछ दिन बाद ये बीज अंकुरित हो जाते हैं।

अगले दिन करम देवता की पूजा के लिए आंगन को साफ करके बुहारा जाता है। पूरे





दिन के उपवास के बाद औरतें अंकुरित बीजों की टोकरियां वहां लाती हैं। ढोल बजाते, नाचते - गाते हुए गांव भर के स्त्री - पुरुष 'करम' नामक पेड़ की एक टहनी काटने को जाते हैं। इस टहनी को ईश्वर रूप दिया जाता है। पिछली बार इतवा और उसके दोस्त भी इस अवसर पर खूब नाचे थे। गीत के बोल कुछ इस तरह थे —

हम जा रहे हैं पावन 'करम' की डाल काटने
देखो, कितने उल्लास से वह स्वागत करता
है यह डाल करम देवता
देखो कितना सुंदर है हमारा राजा !

इस टहनी को मिट्टी की वेदी में प्रतिस्थापित किया जाता है। वेदी के चारों ओर औरतें गोल चक्कर बनाकर बैठती हैं, बीच में होता है पुजारी। और तब पूजा होती है।

करम देवता की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। कथा बांचते बांचते पुजारी

स्त्रियों को फूल चढ़ाने का आदेश देता है।

कथा खत्म होने के बाद स्त्रियां अपना उपवास तोड़ती हैं। वे नाचती गाती हुई अपने घरों को जाती हैं। उसके बाद शुरू होता है पुरुषों का नृत्य। बाद में लौटकर स्त्रियां भी उनके साथ नाचने लगती हैं।

करम पूजा इतवा का प्रिय त्यौहार है। भजन भुक्त ने एक बार बताया था कि जब संथाल और मुंडा लोग अपनी जमीन पर रहते थे, तब यह त्यौहार बहुत ही सज धज के साथ मनाया जाता था। खेत फसलों की हरियाली से लहलहाते थे।

"दादा जी, अब वे खेत कहां गये ?"

"जादू के खेल की तरह सब कुछ खत्म हो गया है, बेटे !"

"और हम फिर भी करम पूजा मनाते हैं!"

"हममें से कुछ लोगों के पास अब भी थोड़ी बहुत जमीन बची है। और मौसम के आने पर मौसम का त्यौहार तो मनाना ही पड़ता है बेटे!"

सुबल मुरमू इतवा को त्यौहार की रीति समझाने की कोशिश करता है। रतन, जो





हाई स्कूल में पढ़ने जाता है, दोस्तों को बताता है कि स्कूल में तो सरस्वती पूजा भी मनाई जाती है।

" हां! क्यों नहीं! हमारे गांव के कई लड़कों ने वहां से पढ़ाई की है। उनमें से कम से कम दस तो अध्यापक बन गये हैं। सही शिक्षा के बिना आदिवासियों की उन्नति कैसे हो सकती हैं!"

आलोमणि बताती है, "जब हम बच्चे थे, तब कहां थे आज की तरह के स्कूल ! आज तो लड़कियां भी स्कूल जाने लगी हैं। मेरे भाई ने तो अपनी लड़की को शहर के स्कूल में पढ़ने को भेज दिया है। वह वहीं रहेगी भी"।

सुबल बताता है, "उन दिनों स्कूल बहुत दूर होते थे, फिर हमारे मां - बाप भी स्कूल भेजने का महत्व कहां समझते थे। लड़कियों की पढ़ाई तो दूर की बात है, लड़कों को भी पढ़ने के लिए बहुत ही कम भेजा जाता था"।

"हम अपने बच्चों को पढ़ाते लिखाते नहीं, इसीलिए दुख दर्द झेलते हैं। हर कोई तो चाचा गुरा सिंह की तरह भाग्यवान नहीं हो सकता!"

गुरा सिंह का नाम लेते ही हर कोई हंसने लगा। इतवा ने सोचा, गुरा सिंह की कहानी जरूर पता करेगा। आखिर ये हैं कौन?

तब इतवा सात वर्ष का रहा होगा। एक दिन मंगल ने कहा, "चलो, मैं तुम्हें स्कूल ले चलूंगा, मैंने तुम्हारी नेकर ठीक कर दी है, कमीज थोड़ी फटी तो है, पर है साफ। चल जायेगी"।

संथाल स्कूल मास्टर गंगाधर हैंब्रोम ने इतवा का नाम और अनुक्रमांक लिखा। मंगल से कहा, "इसे एक स्लेट और खड़िया ले दें। मैं इसे किताबें, कापियां और लकड़ी की पेंसिलें दे दूंगा"।

"आप कब तक किताबें दे दीजिएगा?"

"जब सरकार से मिलेंगी। इस साल कक्षाएं तो चालू हो गयीं लेकिन किताबें अभी तक नहीं पहुंचीं। किताबों के लिए मैं रोज रोज शहर का चक्कर लगा रहा हूं। सड़कों की हालत तो आप जानते ही हैं। चाचा, आप मेरा परिचय हाथीघर आदिवासी क्लब के कार्यकर्ताओं से करवा दीजिए न"!

"ठीक है, मैं करवा दूंगा। लेकिन मास्टर साहब, इस बच्चे का जरा ख्याल रखिएगा। पढ़ना लिखना ठीक से सीख जाय। मैं तो इसके पिताजी को भी पढ़ाना लिखाना चाहता था। लेकिन क्या करें! आदिवासी के पास जब जमीन नहीं होती, तब उसका चूल्हा भी नहीं जलता। इसीलिए हमें अपने बच्चों को बाबुओं की चाकरी में भेजना पड़ता है।"

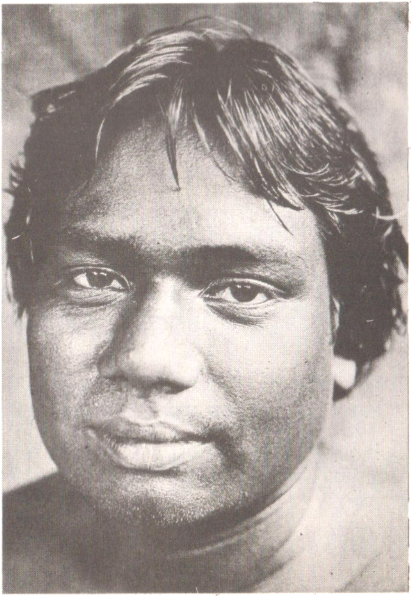
"यह समस्या तो झेलनी ही पड़ती है चाचा, खासकर हम आदिवासियों को। मुझे मोहिनी गांव के स्कूल में जाने के लिए अपने घर वालों से ही झगड़ना पड़ा था। वैसे तो मुझे वजीफा मिलता था, तब भी मुझे बाबू के खेत में काम करना पड़ता था। मुझे छिप छिप कर स्कूल भागना पड़ता था। साल के अंत में जब मैं प्राइमरी परीक्षा में दूसरे नंबर पर आया, तब जाकर मेरे पिताजी को कुछ दया आयी।"

"चूंकि हम लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, कोर्ट कचहरी से घबराते थे इसलिए बाबू लोगों ने धीरे धीरे हमारी जमीनें, हमारे पशु पक्षी, सब हड़प लिये।"

"हां चाचा, आप सही कहते हैं। शिक्षा बहुत जरूरी है। अनपढ़ होने के कारण हमें पता ही नहीं चलता कि सरकार ने हमारे लिए कौन कौन सी योजनाएं चला रखी हैं।"

"मैं अपने इतवा को तुम्हें सौंपे जा रहा हूं ।"

"आप निश्चिंत रहें । सुनो इतवा, एक बात पूछता हूं, जब तुम्हें कहीं से गुड़ मिलता है; तो तुम उसे अकेले खाते हो या अपने दोस्तों के साथ मिल-बांट कर खाते हो।"



"हम मिल-बांट कर खाते हैं ।"

'तो सुनो , हर अच्छी चीज को मिल-बांट कर ही लेना चाहिए। स्कूल तो बहुत अच्छी जगह है, तुम अपने दोस्तों को भी अपने साथ ले आना ।"

"मैं उन्हें भी आने को कहूंगा।"

"आज मैं तुम्हें अपने भारत देश के बारे में बताऊंगा कि यह कितना बड़ा है।"

"भा - र - त। क्या भारत ही हमारा देश है?"

"देखो, इसे नक्शा कहते हैं।"

"हाथीघर कहां है?"

"यहां हमारा प्रांत पश्चिम बंगाल है। यह हमारा मेदिनी पुर है। हाथीघर यहीं कहीं होना चाहिए, दक्षिण पश्चिमी किनारे पर।"

"मुझे क्यों नहीं दिख रहा।"

"मैं शहर से जिले का नक्शा ले आऊंगा। लेकिन तुम हाथीघर कैसे ढूंढोगे?"

"क्यों? मैं पढ़ना सीखूंगा। तब सब बातें जान जाऊंगा।"

"यही मैं सुनना चाहता था। अच्छा, अब इस श्यामपट्ट को देखो। 'अ' यह हमारी वर्णमाला का पहला अक्षर है। यहीं से तुम्हें अपनी पढ़ाई आरंभ करनी है।"

"अ, अ, अ"

"अब इसे अपनी स्लेट पर लिखो। मैं तुम्हें लिखना बताऊंगा।"

पहली मुलाकात के बाद ही इतवा को अपने अध्यापक बहुत अच्छे लगने लगे। जैसे दया और धैर्य की प्रतिमूर्ति। इतवा को एक ही शिकायत थी कि जब तक वह स्कूल में रहा, मास्टर जी ने अपने पाठ की शुरूआत लड़ाइयों की कहानी से कभी नहीं की।

* * *

एक दिन इतवा स्कूल से आ रहा था। रास्ते में अपनी नयी साइकिल पर जाते हुए मोती बाबू दिख गये। रुककर बोले, "तो मंगल अपने पोते को भी स्कूल भेज रहा है।"

"हां बाबू "

"वह बहुत बड़ी गलती कर रहा है। पिछले दिनों मैंने मंगल को कहा तो था कि मैं पोते को भी काम दूंगा।"

इतवा चुपचाप खड़ा रहा।

"यदि तुम लोग ही स्कूल जाने लग गये तो हमारा काम कौन करेगा। चलो, कब तक पढ़ोगे । घर में कितना अनाज होगा।"

जैसे ही बाबू बड़े पीपल से आगे निकले, इतवा भाग कर अपने दादा जी के पास आया। पीपल का यह पेड़ बहुत पुराना है। लोग कहते हैं इस पर सांप रहते थे। इतवा को इस बात पर यकीन नहीं होता। उसे तो यही मालूम है कि सांप जमीन के भीतर बिलों में रहते हैं और चिड़ियों के घोंसलों से अंडे खाने के लिए ही कभी कभार पेड़ पर चढ़ते हैं। सांप बड़े कपटी होते हैं। कभी कभार छिप कर घरों में घुस जाते हैं और लोगों को काट लेते हैं। पानी में रहने वाले सांप और धामिन सांप जहरीले नहीं होते लेकिन धामिन सांप अपनी पूंछ से कोड़े मार सकती है। कुछ संथाल लोग सांपों को खाते भी हैं। बताते हैं कि इनका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है।

"क्या इसका मांस खेत के चूहों जैसा स्वादिष्ट होता है?"

"उससे थोड़ा अलग।"

हालांकि मंगल तो ये सब चीजें नहीं खाता लेकिन इतवा ने अपने दोस्तों के यहां किस्म किस्म के जानवरों जैसे-- खेत के चूहे, सेहें, सांप आदि का मांस चख रखा है।

इतवा ने घर पहुंच कर मंगल को बताया कि रास्ते में मोती बाबू मिले थे और उसके स्कूल जाने की बात जानकर बड़े नाराज हुए थे।

"मुझे पता है। मोती बाबू नहीं चाहते कि हमारे बच्चे स्कूल में पढ़ें। पर सरकार ने आदिवासी बच्चों के लिए हमारे अपने इलाकों में स्कूल खोले हैं । आदिवासियों को जरूर पढ़ना लिखना सीखना चाहिए। हर कोई तो गुरा सिंह की तरह भाग्यशाली नहीं हो सकता।"

"गुरा सिंह ने क्या किया?"

"फिर कभी बताऊंगा।"

सारी बकरियों को इकट्ठा करके वे अंदर लाये। इतवा ने ट्यूबवेल से पानी भरा। मंगल ने खाना बनाने के लिए आग जलायी। इतवा को मछली काटने को दी। "बाबा, फिर यह न कहना कि अपनी सारी कमाई मछली पर खर्च कर दी।"

"नहीं, बेटा नहीं। आज स्कूल में तुम्हारा पहला दिन था न! इसीलिए कुछ खास चीज

तो बनानी चाहिए!"

सुबल मुरमू मंगल के साथ गपशप करने और बीड़ी सुलगाने आया। बचपन से ही मंगल और सुबल दोस्त रहे हैं। दोनों ही बड़े अच्छे निशानेबाज रहे हैं। स्थानीय मुकाबलों में अनेक पुरस्कार जीतते रहे हैं। आदिवासी लोग अमूमन अच्छे खिलाड़ी होते हैं। चाहे किसी हाई स्कूल का वार्षिक उत्सव हो या बिरसा मुंडा की जयंती, सिधू व कान्हू की याद में शहीदी दिवस हो या कोई और क्रीड़ा उत्सव, निशानेबाजी के मुकाबले जरूर होते हैं। कुछ लोढ़ा लड़कियां भी श्रेष्ट निशानेबाज हैं लेकिन वे इन मुकाबलों में हिस्सा नहीं लेतीं।

इतवा ने धीरे से सुबल को बताया, "मास्टरजी कहते हैं, सिंगराई और रतन को भी स्कूल लाना"।

"मैं जानता हूं इतवा, उन्हें भी जाना चाहिए स्कूल। पर मोती बाबू के भाई के पास 50 गाय भैंसें हैं। मैं उन्हें बोल चुका हूं कि दोनों लड़कों को जानवर चराने के लिए भेज दूंगा।"

मंगल ने आह भरी, "यह कब तक चलेगा! एक जून खाना, कुछ कपड़े और कुछ धान के बदले हमारे बच्चे कब तक अनपढ़ रहेंगे। सारी दुनिया आगे बढ़ रही है लेकिन आदिवासी बच्चे अनपढ़ व अज्ञानी ही रह जायेंगे"।

"आप सही कहते हैं। हर कोई तो गुरा सिंह की तरह भाग्यशाली नहीं हो सकता।"

इतवा से रहा न गया, "आज तो आपको गुरा सिंह की कहानी बतानी ही पड़ेगी"।

"मैं बताऊंगा बेटे तुम्हें गुरा सिंह की कहानी," सुबल ने ढाढस बंधाया। "लेकिन पहले मछलियों को काटकर और साफ करके तो लाओ। देखते हैं मंगल को खाना बनाना याद भी है कि नहीं। पता है इतवा, एक जमाने में तेरे बाबा बहुत ही बढ़िया खाना बनाते थे। शिकार के त्यौहार के बाद अकसर यही खाना बनाता था। अब तो जानवर भी जाने कहां गायब हो गये हैं। क्यों मंगल! जंगल भी कहां खो गये?"

उदास होकर मंगल बोला, "उड़ीसा में नया ग्राम के आस पास थोड़े से जंगल बच गये हैं। सुवर्णरिखा पर नया पुल बन जाने से थोड़ा फायदा तो जरूर होगा, लेकिन जो थोड़े बहुत जंगल दिखाई देते हैं, तब ये भी गायब हो जायेंगे। हमारे पास रह जायेगा सिर्फ रेगिस्तान"।



"इससे पहले कि वहां से पेड़ गायब हो जायें, हमें एक बार तो बच्चों को वह जगह दिखा लानी चाहिए। कम से कम ये भी देखें कि आदिवासी लोग पूरी तरह से जंगलों पर कैसे निर्भर करते हैं।"

"हां, हमें ज़रूर चलना चाहिए।"

इतवा पूछने लगा, "पूरी तरह से जंगलों पर कैसे निर्भर करते हैं? मैं समझा नहीं"?

सुबल जैसे ख्वाबों में खो गया, "महुवे के बीजों से तेल निकालकर वे खाना बनाते हैं और अपनी बत्तियां जलाते हैं। महुवे के फूलों को सुखाकर वे छोटे छोटे गोले बनाते हैं और खाते हैं। कंदमूलों, पत्तियों और फलों के सहारे वे अपनी गुजर करते हैं। वे हिरण, चिड़ियों और छोटे जानवरों का शिकार भी खाते हैं। साल के पत्तों के दोने बनाते हैं और नीम व साल के बीजों की पिराई करके तेल निकालते हैं"।

"उनकी जिंदगी तो बड़े मजे में कटती होगी।"

"एक जमाना था जब सभी आदिवासी ऐसा ही जीवन जीते थे। जंगल हमारी मां है। हम सब उसकी संतानें हैं। जब हमने खेती शुरू की तब भी हमने जंगलों पर निर्भरता छोड़ी नहीं, पर इतवा अब जमाना बदल गया है। इसलिए जीना है तो जमाने के साथ साथ आदिवासियों को भी बदलना होगा।"

"सुबल, इसीलिए तो मैं कहता हूं कि बच्चों को स्कूल भेजो।"

"हां, तुम सही कहते हो। इस साल नहीं, तो अगले साल ही सही।"

"बाबा, आप मुझे गुरा सिंह की कहानी नहीं बता रहे?" इतवा अधीर होकर बोला।

"इस कहानी के लिए तुम मंगल के ही पीछे क्यों पड़े हो? मैं बताऊंगा तुम्हें गुरा सिंह की कहानी। अब तुम स्कूल भी जाने लगे हो, इसलिए तुम्हें यह कहानी जरूर सुननी चाहिए। आदिवासी इस कहानी से बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

"अच्छा तो सुनो, हालांकि यह थोड़े समय पहले की ही बात है लेकिन लगता है जैसे युगों पुरानी दास्तान हो। सुवर्णरिखा के किनारों पर मुंडा और लोढ़ा आदिवासियों के अनेक गांव थे। इन गांवों में गुरा सिंह की बहुत जमीन थी। मुझे लगता है मंगल भाई तुम्हारा इतवा भी बड़ा हीरा लड़का है। बाजार वाले दिन हमेशा भजन भुक्त के साथ घर लौटता है। एक जमाना था, जब भजन के पास भी काफी जमीन थी। अच्छा

सुनो, गुरा सिंह बहुत बड़ा जमींदार था। उसके पांच लड़के थे और दस मवेशी। लेकिन उसके सारे लड़के मूर्ख और अनपढ़ निकले। गुरा सिंह शराब का बड़ा शौकीन था।''

''सुबल भाई, यह शराब तो ऐसी है कि पूछो मत। हम आदिवासी इसे नहीं, बल्कि यह हमें पी जाती है।''

''मंगल भाई, हम अपने दुख भुलाने के लिए पीते हैं शराब।''

''यह जो देशी शराब है ना 'हेंदिया', इससे कुछ नुकसान नहीं होता। नुकसान तो उस विदेशी शराब से होता है जो बाजार में मिलती है।''

''इसी की वजह से गुरा सिंह खत्म हो गया। गोपी उससे कहा करता था, 'पैसे की परवाह मत कर गुरा, जितनी इच्छा हो पी ले। मैं तुम्हारे खाते में लिख दूंगा। बस इस कोरे कागज पर अंगूठा टेक दो।''

''तो गुरा सिंह वैसा ही करता था?''

''हां, वह वैसा ही करता था। साल के अंत में गुरा सिंह को पता चला कि उसके पास सिर्फ 10 बीघा जमीन बच गयी है। बाकी पर गोपी ने कब्जा जमा लिया था। वह रोता बिलखता हमारे पास आया और कहने लगा, 'मैं घोर संकट में हूं भैया। गोपी मुझे अदालत में ले जा रहा है। मैंने सारी जमीन उसे बेच दी है, ऐसा बयान देने को कहता है'। उसके लड़के भी मदद मांगने के लिए आये। तब मैंने, मंगल ने और अन्य लोगों ने गुरा से वचन लिया कि वह शराब पीना छोड़ देगा। तब हमने उसे लेकर शहर जाने और वहां पर चतुर संथाल वकील से मिलने का दिन तय किया।''

''एक आदिवासी वकील?''

''हां, बेटा, आदिवासी वकील हो सकते हैं, अध्यापक हो सकते हैं और अब तो आदिवासी लड़कियां भी अध्यापिका और नर्सें बन रही हैं। वकील ने पहले कहा, 'इस गोपी की पिटाई की जरूरत है और गुरा सिंह की भी'। उसके बोलने का यही तरीका था। अंत में उसने कहा, 'गुरा, जब तुम अदालत के सामने जाओ तो जो भी मजिस्ट्रेट कहे तुम वही कहना। अपनी तरफ से एक भी शब्द मत बोलना'।''

''तब क्या हुआ?''

''अदालत में चपरासी ने आवाज लगाई, ...'गुरा सिंह। गुरा सिंह।' .... और तब गुरा ने दुहराया,.... 'गुरा सिंह!' .... 'ढंग से जवाब दो, क्या तुम गुरा सिंह हो?' वह भी वैसे



ही बोला, 'ढंग से जवाब दो, क्या तुम गुरा सिंह हो?' इसी प्रकार कुछ देर तक चलता रहा। मजिस्ट्रेट अचरज में पड़ गया। गोपी के वकील ने कहा, 'क्या तुम गधे हो? इतनी बेवकूफी क्यों दिखा रहे हो'? गुरा ने दुहराया, 'क्या तुम गधे हो, इतनी बेवकूफी क्यों दिखा रहे हो'?"

"मजिस्ट्रेट ने पूछा, 'क्या तुम सीधी सादी बात भी नहीं समझ पा रहे हो? वाकई मूर्ख हो क्या?' गुरा ने भी मजिस्ट्रेट को ये ही शब्द सुना दिये। मजिस्ट्रेट को गुस्सा आ गया। उसने कहा, 'मैं इस मामले की सुनवाई टालता हूं। मामला रद्द समझा जाय। इस अदालत में तुम ऐसे बेवकूफ आदमी को कहां से पकड़ लाये'?"

"तब?"

"तब संथाल वकील ने मजिस्ट्रेट को सारी बातें बतायीं। गोपी को प्रताड़ित होना पड़ा। उस पर जुर्माना भी हुआ। उन्होंने जान लिया कि वह गैर कानूनी तरीके से आदिवासियों की जमीन खरीद रहा था।"

"गुरा सिंह को जमीन वापस मिली?"

"बिल्कुल। तब हम सब चाय की दुकान पर गये। गोपी वहां आया और चिल्लाया, 'गुरा सिंह, मैं तुम्हें खत्म करके रहूंगा'। और गुरा ने जवाब दिया, 'गोपी, मैं तुम्हें खत्म करके रहूंगा'। हम सब ने गोपी को चाय की दुकान से भगा दिया।"

"गोपी भाग गया और कभी वापस नहीं आया। आदिवासियों को शराब की लत में डालकर उनकी जमीन हथिया लेने का यह अंतिम प्रयास था। हमने बाजार से उसकी दुकान भी हटवा दी। यही है गुरा सिंह की कहानी। यही अवसर था जब एक अशिक्षित आदिवासी ने दूसरों का मुकाबला किया और अपनी जमीन बनाये रखी।"

मंगल ने कहा, "यदि वह पढ़ा लिखा होता, तो वह अपनी जमीन को रख सकता था। इससे साबित होता है कि कैसी भी बाधायें हों, आदिवासियों को शिक्षित अवश्य होना चाहिए"।

* * *

जिस समय इतवा को नयी पुस्तकें मिलीं, ग्रीष्म अवकाश शुरू हो चुका था। अध्यापक ने कहा, "छुट्टियों में अक्षरमाला अच्छी तरह सीखना। तब हम स्कूल में पाठ शुरू करेंगे"।

"क्या छुट्टियों में आप घर जा रहे हैं साहब?"

"हां, मुझे भी पढ़ाई करनी है।"

"क्यों? आप तो पहले ही अध्यापक हैं?"

"मैं और अच्छा अध्यापक बनने के लिए पढ़ाई कर रहा हूं।तुम्हें अच्छी तरह पढ़ना सीखना चाहिए। कौन जानता है कि एक दिन कक्षा में तुम ही प्रथम आओ।"

हां, इतवा बहुत अच्छी तरह पढ़ना चाहता था, लेकिन उसे अपने दादाजी की भी मदद करनी होती थी। मोती बाबू के घर बहुत काम था। मंगल स्वयं सारा काम नहीं कर सकता था।

* * *



ग्रीष्म अवकाश के दौरान बहुत सी नयी बातें हुईं। रतन, सिंगराई और इतवा दुबारा एक साथ खेलने लगे। जब इतवा ने उन्हें गुरा सिंह की कहानी सुनाई तो वे बहुत चकित हुए। वे खूब हंसे।

इसके बाद भजन भुक्त की पोती सोना का विवाह हुआ।

भजन ने इतवा से कहा, "मैं गरीब आदमी हूं, मैं सभी लोगों को नहीं बुला सकता, लेकिन तुम जरूर आना"।

जब मंगल ने यह सुना तो सोचा कि यदि इतवा शादी में गया तो बाड़ कौन करेगा।

"शादी एक ही दिन की तो है। मैं उसके बाद बाड़ लगा दूंगा। मैं दुलंग के पार जाकर नागफनी की शाखायें ले आऊंगा और रोप दूंगा। इससे बकरियां नहीं आ सकेंगी। जब बारिश आयेगी तो शाखाएं बढ़ जायेंगी। ठीक है न।"

"हां, वह तो ठीक है। पर तुम्हें पढ़ाई भी करनी है।"

"मैं पढ़ाई भी कर लूंगा और बाकी सारे काम भी कर दूंगा। आप देखते रहना।"

"ठीक है। तुम शादी में चले जाना। भज़न तुम्हें बहुत चाहता है।"

* * *

कटाई के बाद खेत में बची पड़ी धान को तुंग कहते हैं। गांव का कोई भी व्यक्ति उसे ला सकता है। लेकिन इसमें आदमियों को जंगली चूहों से मुकाबला करना पड़ता है। ये चूहे सुरंग जैसे बिल बनाते हैं और उनके परिवार यहां अन्न के गुप्त भंडार बना लेते हैं। आदिवासी बच्चे इन गोदामों का पता लगाकर चावल निकाल लेते हैं और कुछ तो चूहों को भी खा जाते हैं।

आज भी लोढा लोग चूहों, गिरगिटों, सर्पों, केकड़ों, मछलियों आदि को खा जाते हैं। उन्हें जंगल के कई गुप्त रहस्यों में विशेषज्ञता प्राप्त होती है। जो लोढा खेती बाड़ी में लगे हैं उनमें भी यह शिकार कौशल बरकरार है। वे बकरी की खाल का ढोल बनाते हैं जिसे नाचते गाते समय बजाते हैं। वे जितने भी देवी - देवताओं की पूजा करते हैं, उनमें शीतला का त्यौहार अभी भी महत्वपूर्ण है।

इतवा ने मंगल से कहा, "छुट्टियों में मैं गायों को चराने ले जाऊंगा। तुम सब्जियों की क्यारियों में पानी देना। मैं बाहर के आंगन को भी आराम से बुहार दूंगा"।

"लेकिन तुम पढ़ोगे कब?"

"मैं शाम को पढ़ लूंगा। तुम देख लेना।"

"ठीक है, पर सावधान रहना।"

"क्यों, तुम क्या सोच रहे हो?"

"मैं सोच रहा था कि दिन भर मैं बेकार नहीं बैठ सकता। मैं खजूर के पत्ते काट लाऊंगा और उनसे चटाई बुनूंगा। मैं पहले भी यही करता था।"

जब इतवा गायों को बाड़े से बाहर ले जा रहा था तब मोती बाबू ने उसे देखा। वे प्रसन्न मुद्रा में थे।

"तो तुमने अपने दादा की मदद करने का निर्णय लिया है।"

"जी बाबू साहब। छुट्टियों में।"

"क्यों, तुम फिर स्कूल जाओगे?"

इतवा ने केवल सिर हिलाया। मोती बाबू को क्या पता कि स्कूल में अध्यापक ने उसे क्या कहा था। उन्होंने कहा था कि वे सभी संथाल, मुंडा और लोढा बच्चों को स्कूल



लायेंगे। जब स्कूल दुबारा खुलेगा तो वे कहानियों की पुस्तकें लायेंगे और पढ़ कर सुनायेंगे। परीक्षा के बाद वे अपने पास से पुरस्कार देंगे।

अध्यापक ने कहा था, "इतवा, पुराने समय में केवल धनुष बाण रखना ही पर्याप्त था। आजकल के जमाने में जीने के लिए शिक्षा जरूरी है"।

जब इतवा बाबू की गायें और अपनी बकरियां लेकर दुलंग के पार आया और सुवर्णरिखा के रेतीले किनारों पर पहुंचा तो अचानक ही वह स्वतंत्र और प्रसन्न नजर आया। उसने अपनी बाहें पसारी और नाचने लगा। वह कूदा और चक्कर काटने लगा। मछली का जाल लगाकर वह लंबी लंबी घास में चलने लगा। उसने देखा कि बूढ़ा खरगोश वहीं पर था। इसे वहीं रहने दो, उसने सोचा। इतवा उसे न तो मारेगा और न ही कभी किसी को उसके बारे में बतायेगा। उसने कुछ खाने वाले पत्ते एकत्र किये और पांच छह मछलियां पकड़ी। उसकी नजर चिड़ियों के कुछ खाली घोंसलों पर गयी। उसने विचार किया कि इन्हें घर ले जाय। लकड़ी जलाने के लिए ये बहुत अच्छे रहेंगे। सोना की शादी में दो दिन और थे। आज और कल। परसों शादी है। जैसे ही उसने घोंसलों को टाट के थैले में रखा, आकाश और हवा की ओर मुंह करके चिल्लाया, "तुम्हें क्या पता है, मैं सब कुछ पढ़ने लगूंगा - अ, आ, इ, ई,"। आकाश ने जैसे जवाब दिया हो। लंबी लंबी घास खुशी से लहराने लगी।

अगले दिन सोना का भाई इतवा को बुलाने आया। "शादी से पहले और भी कई नेग हैं, क्या तुम उन्हें नहीं देखोगे?"

इतवा उसके साथ चला गया। उसने देखा कि महिलाएं गांव के देवता गरम के पास एक नया मिट्टी का घड़ा ले गयी हैं और उसे गीत गा गा कर प्रतिष्ठित कर रही हैं। आज सोना का पिता इस घड़े में मछली और भात पकायेगा और अपने पूर्वजों का श्राद्ध करेगा। महिलाएं हाथों में फावड़े लिये हुए गीत गा रहीं थीं और पुरुष ढोल बजा रहे थे। उन्होंने पुराने सिद्ध वृक्ष की जड़ों से तीन फावड़े मिट्टी ली तथा भजन के आंगन में लाकर बिछा दी जहां विवाह की वेदी बनायी जानी थी। जमीन पर फावड़ा चलाने से पहले धरती माता की पूजा की गयी तथा उसे चोट पहुंचा कर मिट्टी निकालने के लिए क्षमा मांगी गयी।

इसके बाद महिलाएं गीत गाती हुई दुलंग नदी पर गयीं। एक तीर चलाकर पानी में

पहचान बनायी गयी तथा पानी को घड़ों में भरा गया। तब दुलहे के घर पर एक संदेशवाहक भिजवाया गया जिसको एक पात्र दिया गया। इस पात्र में पके हुए चावल, मिठाइयां, एक शीशा , एक कंघा और एक जोड़ी कंगन रखे हुए थे। सोना नयी साड़ी में पूरी दुलहन लग रही थी। उसकी गर्दन पर एक लाल रंग की माला थी, कलाई पर पीले धागे बंधे थे और हल्दी से उसकी देह चमक रही थी। कोई विश्वास नहीं कर सकता था कि यह वही सोना है जो कल तक जंगलों में बकरी चराती घूमती थी।

"हमारे साथ खाओ", इतवा से भजन ने कहा।

"दादाजी, आज नहीं", इतवा ने जवाब दिया, "अब मुझे बाबा के पास जाने दीजिए"।

* * *

पुराने आम के बगीचे में इतवा ने मंगल को देखा। उसने लकड़ियों का एक गट्ठर एकत्र किया हुआ था और थका सा, बहुत अधिक थका सा दिख रहा था। इतवा को मालूम नहीं था कि उसके दादाजी कितने बूढ़े हो चुके हैं।

"बाबा, घर जाओ। मैं गाय चरा लूंगा, बगीचे में पानी दे दूंगा और गट्ठर घर ले जाऊंगा।"

"मुझे यहीं आराम करने दो। इस गट्ठर को दुकानदार के पास ले जाओ और इसके बदले थोड़ा तेल और नमक ले आना। जब घर पहुंच जाओ तो चूल्हे पर चावल चढ़ा कर उबाल लेना।"

"मेरे साथ आओ।"

"मैं जल्दी ही आऊंगा। बताओ कि भजन के घर तुमने क्या देखा?"

"उनके बहुत से रीति रिवाज वही हैं जो हमारे हैं।"

"तुम सोना को क्या उपहार दोगे?"

"मैं क्या दे सकता हूं?"

"जो मैंने चटाई बुनी है वह दे देना।"

"वह तो बहुत सुंदर है। तुमने उसमें रंग भी भरे हैं। बाजार में वह पांच या सात रुपये की बिक जायेगी।"

मंगल कांपती आवाज में बोलने लगा, "इतवा, तुम्हें शादी में खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। आदिवासियों में शादी विवाह पर सबकी जिम्मेदारी होती है। जिसकी जितनी

हैसियत हो हरेक कुछ न कुछ लेकर आता है"।

"जो शहरों में रहते हैं वे क्या करते हैं?"

"वे शादी के लिए गांवों में आते हैं, ठीक है न? मुझे क्या पता कि हमारे रिवाजों को वे शहरों में कैसे निभाते हैं।"

"चंद चाचा बता रहे थे कि जिस गांव के हम असली रहने वाले हैं, वहां के रीति रिवाज अलग थे।"

"उसे पता होगा। वह बहुत घूमा फिरा है। लेकिन समय कितना भी क्यों न बदल गया हो हम अपने रीति रिवाज, तीज त्यौहार और रहन सहन को बनाये रखने की कोशिश करते हैं। ऐसा नहीं है कि हम उनको उसी रूप में बनाये हुए हैं जैसे वे शुरू में थे। पहले सरहुल बाहा या सुरजोम बाहा त्यौहारों पर सैकड़ों साल वृक्ष फूलों से लदे होते थे, पलाश और सेमल पर रंगों की छटा होती थी। सारी रात आदमी और औरतें नाचते रहते थे। वे भी क्या दिन थे। और आज उतने पेड़ ही नही हैं।"

"हमारे अध्यापक कह रहे थे कि स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में हम काफी सारे पेड़ लगायेंगे।"

"यह तो बढ़िया बात है। अब तुम दुकानदार के यहां जाओ।"

"आपने कितनी सारी लकड़ियां इकट्ठी की हैं, बाबा।"

"ये इस सूखे आम के पेड़ की हैं।"

"बाबा, इसके नीचे मत बैठो। कोई शाखा टूट कर गिर पड़ेगी।"

"नहीं रे, यह पेड़ तो मेरा दोस्त है।"

"हुं! क्या कोई पेड़ भी दोस्त होता है?"

'हां, होता है। मैं इन सब पेड़ों को जानता हूं। तुम्हें पता भी नहीं है,इन सब पेड़ों की शादी हो चुकी है।"

"शादी!"

"हां, लोढा दुलहे को अपनी दुलहन से विवाह करने से पहले आम के पेड़ से शादी करनी होती है। इसी प्रकार लड़कियों को पहले महुआ के पेड़ से शादी करनी पड़ती है।"

"अजीब रिवाज हैं।"

"ये अच्छे रिवाज हैं, इतवा। हर किसी को पेड़ की तरह मजबूत और उपयोगी होना चाहिए।"

इतवा लकड़ी के गट्ठर को दुकानदार के पास ले गया। वहां से तेल और नमक लेने के बाद वह मछली का शोरबा बनायेगा और उसमें वे जड़ें भी डालेगा जो उसने कल एकत्र की थीं। दादाजी हर शाम कुछ चावल घर लाते थे। बाबू उसे चावल देते रहते थे और वर्ष के अंत में हिसाब में जोड़ देते थे। बाबा को पानी भरना होता था। आंगन बुहारना होता था। बाबा खुद इतना सारा काम कैसे कर सकते थे!

क्या इतवा को मां बाप की याद आती थी? उसे उनमें से कोई भी याद नहीं था। दादा ही उसके सब कुछ थे। उसे पता था कि उसकी मां गाया करती थी। इतवा भी अच्छा गाता था। एक दिन वह मुंडा नौटंकी मंडली में शामिल होगा और राजा की भूमिका करेगा। अपनी लकड़ी की तलवार भांजेगा और गलत काम करने वालों को सजा देगा।

कटाई के बाद यदि फसल अच्छी होती तो आदिवासी नौटंकी करते थे। हाथीघर के आदिवासी लोग अपनी ही नौटंकी मंडली शुरू करने वाले थे।

जब इतवा ने घर का काम पूरा कर लिया तो दरवाजे की कुंडी लगायी और दौड़कर मोती बाबू के बाग में चला गया और सब्जी की क्यारियों में पानी देने लगा। मोती बाबू बहुत खुश हुए। उसने कहा, "अरे इतवा, तुम तो बहुत जल्दी काम करते हो। यदि तुम मेरे पास काम करो तो भरपूर खाना मिलेगा और कपड़े भी। केवल नेकर ही नहीं बल्कि कमीज और गमछा भी"।

"लेकिन ......"

"हां, मैं जानता हूं मंगल के दिमाग में तो भूसा भरा है। रतन और सिंगराई को देखो। मेरे भाई के घर में वे राजा की तरह रह रहे हैं।"

इतवा ने इन सब की अनसुनी करने का प्रयास किया।

* * *

अगले दिन इतवा ने एक साफ नेकर और कमीज पहनी तथा बगल में नयी चटाई दबाये विवाह के लिए चल पड़ा। दुलहा दूसरे गांव का एक हृष्ट - पुष्ट जवान था। सोना सोने की परी जैसी लग रही थी। इतवा को उसके भाई मानिक ने बताया कि दुलहा बहुत बहादुर था। एक बार वह भालू भी मार चुका है।



"कहां?"

"उनके गांव के पास वाले जंगल में। मैं भी वहां शिकार के लिए जाऊंगा।"

महिलाएं गा रहीं थीं :

दुलहन की शादी होगी महुए के पेड़ से
और दुलहा ब्याहेगा बड़े से आम को
कितना आनंद होगा इस विवाह का
दुलहे का नाम होगा हर आम के पत्ते पर
दुलहन के नाम की होंगी महुए की पत्तियां
कितना आनंद होगा इस विवाह का।

सोना को उसी पानी में नहलाया जिसे तीर चलाकर चिह्नित किया गया था और एक दिन पहले घड़ों में भर कर लाया गया था। इसके बाद वह लाल किनारी वाली सफेद साड़ी पहन कर बाहर आयी। उसने अपनी भाभी का हाथ पकड़ रखा था। दुलहे ने भी अपनी भाभी का हाथ पकड़ रखा था। लोढा पुजारी ने उनके हाथों पर धागा बांधा और एक दूसरे के हाथ में हाथ दिया। इसके बाद उसने पानी के छींटे मार कर उन्हें पवित्र किया और हाथ छुड़वाये। सोना को दुलहे के चारों ओर उलटा घुमाया गया। जब दुलहा उसे घर ले जायेगा तब वह उसकी मांग में सिंदूर भरेगा।

विवाह संस्कार के पश्चात चावल और मांस की दावत दी गयी। सांझ ढलने से पहले



एक परदे वाली बैलगाड़ी में सोना को बिठा कर उसके पति के घर रवाना किया गया। सोना रोने लगी और उससे भी अधिक उसकी छोटी बहन रोयी। बूढ़े और अंधे भजन ने कहा, "आज मेरी प्यारी बिटिया दूर जा रही है। मेरे हृदय को आज वह खाली कर गयी है"।

आदिवासियों में दहेज प्रथा नहीं है। दुलहे वालों को दुलहन की कीमत के रूप में 101 रुपये देने पड़ते हैं जबकि दुलहन सोने की तरह चमक रही होती है।

* * *

मंगल ने कहा, "सोना की शादी हो गयी। अब अपनी पढ़ाई पर भी ध्यान दो इतवा और आज शाम को आदिवासी क्लब में भी जाओ। एक बैठक है"।

"क्या बच्चे बैठक में आ सकते हैं?"

"हां, इस बार बच्चे भी आयेंगे।"

"तुम्हारी आवाज क्यों कांप रही है? क्या तबीयत ठीक नहीं है?"

"अब मैं बूढ़ा हो चला हूं। अब पहले वाली बात कहां है।"

"लेकिन तुम्हें उस समय तक जिंदा रहना है जब तक कि मैं बड़ा न हो जाऊं और



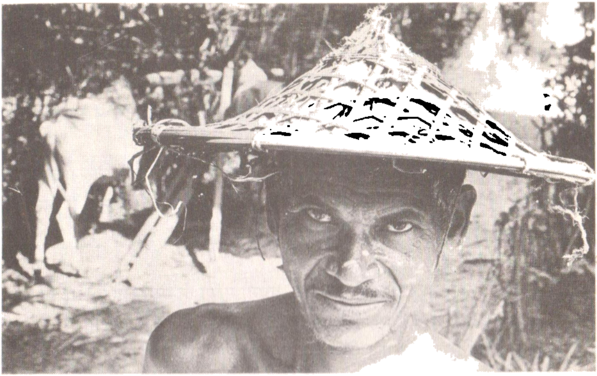


इस विद्यालय से मोहिनी के विद्यालय में नहीं पहुंच जाऊं जहां छात्रावास भी है। एक दिन मैं भी अध्यापक बनूंगा। यदि तुम उस समय तक जीवित नहीं रहोगे तब मैं तुमसे कभी बात नहीं करूंगा, बाबा।"

'मैं बिरसा भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उस दिन तक मुझे अवश्य जीवित रखे।"

* * *

गर्मियों की छुट्टियां बहुत अच्छी रहीं। हर वर्ष 1855 - 1856 की संथाल क्रांति की याद में 30 जून को सिधू कान्हू दिवस मनाया जाता है जिसके उपलक्ष में हाथीगढ़ आदिवासी क्लब टूर्नामेंट आयोजित करता है। 15 नवंबर को संथालों के महान नायक बिरसा भगवान का जन्मदिन मनाया जाता है। शाम के समय क्लब के अंदर ये लोग पुस्तक पत्रिकाएं पढ़ते हैं और कैरम खेलते हैं। जितेन मुरमू नामक एक सज्जन शहर से इस क्लब के लिए खेल पत्रिकाएं, अखबार और अन्य पुस्तकें भेजता है। वह शहर में एक बैंक में काम करता है। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को फुटबाल का प्रशिक्षण देते हैं और उन्हें कसरत आदि सिखाते हैं।



प्रहराज सिंह मुंडा लाल बारी गांव में वरिष्ठ अध्यापक है। उसने कहा, "कुछ पढ़ाई लिखाई और खेल सीखो। इससे तुम्हें जल्दी नौकरी मिलेगी"।

आदिवासी क्लब सांस्कृतिक समारोह जैसे नृत्य और संगीत प्रतियोगिताओं तथा अंत्याक्षरी का भी आयोजन करता है।

लेकिन इस वर्ष हर चीज अलग थी।

प्रहराज ने कहा, "यह बहुत दुख की बात है कि हमारे अधिकांश बच्चे पढ़ने नहीं जाते और जो जाते हैं, वे ठीक ढंग से नहीं पढ़ते"।

चंद ने कहा, "जब मां बाप बच्चों को रोटी नहीं दे सकते तो पढ़ायेंगे कैसे"?

"हां, मैं यह जानता हूं। लेकिन फिर भी बच्चों को पढ़ने के लिए भेजना चाहिए।"

"चाहे उनकी समझ में न आये, तब भी?"

"हां, यह बात मैं आपसे कहना चाहता हूं। जितेन ने हमें एक पैट्रोमैक्स की लालटेन भेजी है। हममें से जो लोग अतिरिक्त समय दे सकते हैं, वे शाम के समय यहां आकर बच्चों को पढ़ायें। हममें से प्रत्येक परिवार इसमें एक रुपया देगा। उस रकम का उपयोग

तेल, स्लेट, पेंसिल आदि खरीदने में किया जायेगा।"

"ठीक है। लेकिन वे पढ़ भी गये तो क्या होगा। चरानी तो है गाय ही।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो। हम बड़ों को अध्यापकों की बात अच्छी तरह समझनी चाहिए। उनकी उपेक्षा के लिए भी हम जिम्मेदार हैं। हमारे बच्चे दिन में स्कूल जायेंगे और रात को हम उन्हें पढ़ायेंगे।"

भैरों सिंह मुंडा इन वर्षों में बहुत ही गुस्सैल हो गया था। वह चिल्लाया, "यह तो ठीक है। लेकिन हमारी सड़कों का क्या होगा? हमारे यहां सड़कें नहीं हैं, इसलिए यहां बसें नहीं आतीं और चूंकि पानी का कोई साधन नहीं है, इसलिए हम वर्ष में दो फसल नहीं ले सकते"।

"हम लोगों में चेतना जगायेंगे और सब अपनी मांगों के लिए लड़ेंगे। मां भी बच्चे को तभी दूध पिलाती है जब वह रोता है। लेकिन सबसे जरूरी है शिक्षा।"

मंगल ने भैरों सिंह को गुरा सिंह की कहानी याद दिलायी।

प्रहराज ने दुहराया "हां, गुरा सिंह की कहानी याद करो। कभी भी अपना अंगूठा खाली कागज पर मत लगाओ। साथ ही शराब पीना छोड़ दो"।

"और कुछ," भैरों ने चिल्ला कर पूछा।

"ठीक है। हमारे बारे में कहा जाता है कि हमने वनों का विनाश किया है। हमें पता है कि इसके लिए वास्तव में कौन उत्तरदायी है। इस वर्ष हमारे स्कूली बच्चे क्लब में, स्कूल के आसपास और हमारे घरों के आसपास पेड़ लगायेंगे।"

"तुम्हें पौद कौन देगा?"

"सरकार।"

"तुम क्लब में कब से शाम को पढ़ाना शुरू कर रहे हो?"

"कल से ही क्यों नहीं? हम बच्चों को गाना और बांसुरी बजाना भी सिखायेंगे। इतवा, रतन, सिंगराई सभी अच्छा गाते हैं। मैंने गाय चराते समय उनसे सुना है। मंगल चाचा की तरफ देखो—वह इस उम्र में भी कड़ी मेहनत करता है ताकि अपने पोते को स्कूल भेज सके। तुम तो जवान आदमी हो। क्या तुम उससे कुछ नहीं सीख सकते?"

"ठीक है। नया अध्यापक अच्छा लगता है। देखते हैं हम उसकी क्या मदद करते हैं।"

'लोढ़ा लोगों में लड़कियां भी बी.ए. तक पढ़ गयी हैं। चाचाजी, यह बात तो माननी

पड़ेगी कि प्रयत्न किया जाय तो सफलता अवश्य मिलती है।"

इतवा बहुत खुश था। जो क्लब अभी तक बड़े लोगों का था अब वहां बच्चे भी जाने लगेंगे।

अगले दिन गाय चराते समय इतवा जोर जोर से गा रहा था। दुलंग नदी के पानी की ओर देखकर उसने कहा, "अब तुम देखना अच्छी तरह देखना, हर एक चीज बदलेगी। हमारा अध्यापक बहुत अच्छा है, क्या तुम्हें पता है"?

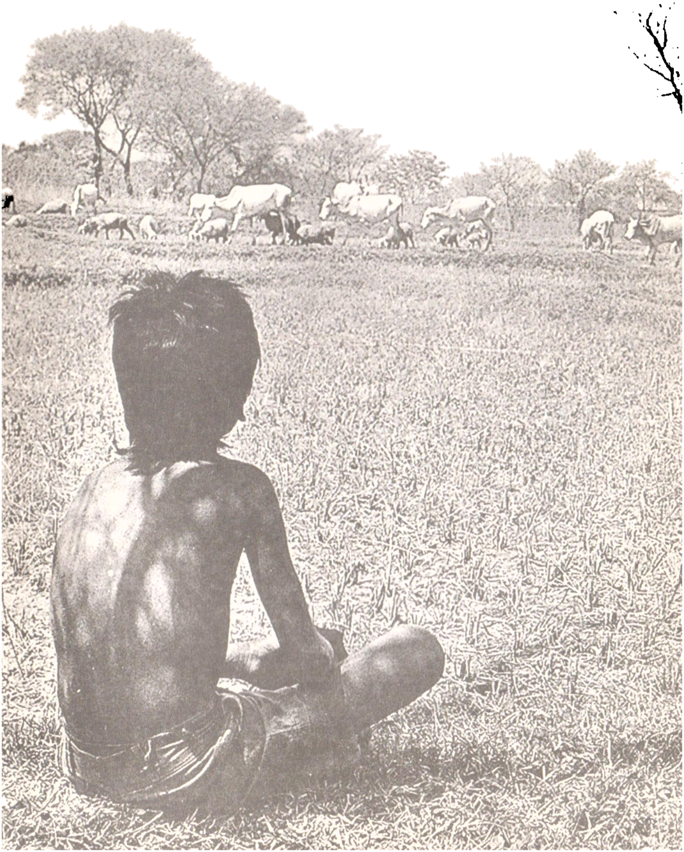
आदिवासी बच्चों को स्कूल में कई प्रकार की मुश्किलें आती हैं। चूंकि वे खुले मैदानों में नदी के पास जंगलों के बीच रहते हैं, इसलिए उन्हें पाठशाला का कमरा घुटनभरा लगता है। अगर उनका अध्यापक भी आदिवासी हो तो उन्हें बड़ी खुशी होती है। वह उन्हें समझ सकता है और उनकी समस्याओं को अच्छी तरह जान सकता है। हालांकि इस क्षेत्र के अधिकतर आदिवासी बंगाली भाषा बोलते हैं, लेकिन बेचारे गरीब अशिक्षित ग्रामीण शहरी लोगों द्वारा बोली गयी बंगाली को भी नहीं समझते। फिर भी उन्हें मोती बाबू की भाषा समझने में कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि वे उसी गांव के हैं।

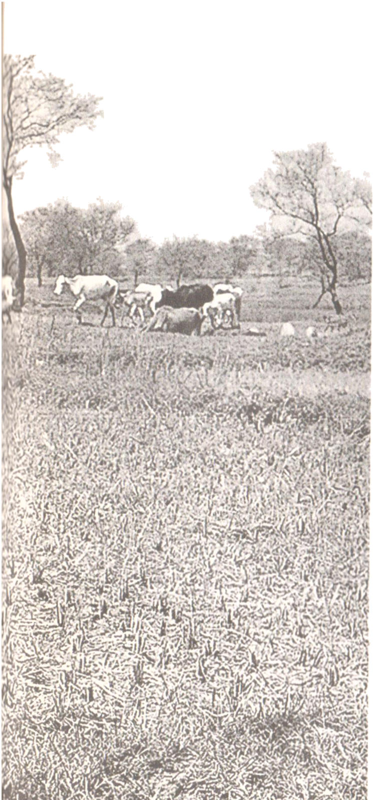
अचानक इतवा ने एक गोह देखी। वह चिल्लाया, "छुप जा, छुप जा"। लोढ़ा लोग दुर्गा पूजा के दूसरे दिन गोह की तलाश में रहते हैं। एक कथा के अनुसार इस दिन उनका राजा कालकेतु एक बार जादुई नीला फूल लेने के लिए जंगल में गया। वहां कहीं भी यह फूल नहीं मिला। तब वह उसके बदले में गोह पकड़ लाया। आने पर गोह वनदेवी बन गयी और उसने कालकेतु को एक आदिवासी राज्य की स्थापना में मदद की। लोढ़ा लोग, जो पेशे से शिकारी होते हैं, मानते हैं कि वे भी कालकेतु की तरह वीर और साहसी बनेंगे।

कुछ कंदमूल और हरी सब्जियां एकत्र करने के बाद इतवा अपनी प्रिय भैंस की पीठ पर चढ़ गया। उसे सिधू या कान्हू अथवा बिरसा भगवान के बारे में बहुत कम ज्ञात था। लेकिन वह आसमान की ओर देखकर चिल्लाया, "एक बार मैं पढ़ना सीख जाऊं तो इन सबके बारे में जान जाऊंगा"।

* * *

इतवा को यह पता नहीं था कि यह उसकी खुशी का अंतिम दिन है, पढ़ाई सीखने





के बारे में उसकी इच्छा थोड़े ही समय रहने वाली थी। जब वह भैंस की पीठ पर लेटकर गुनगुनाता हुआ गांव की ओर आ रहा था तो उसने देखा कि लोग चिल्लाते हुए उसकी ओर दौड़े आ रहे हैं, "इतवा, तुम कहां हो? मंगल एक पेड़ के नीचे दब गया है"।

"नहीं!" इतवा चीखा और चंद तथा भैरों की तरफ भागा। वे इतने मुरझाये हुए क्यों लग रहे थे?

"मोती बाबू के आम के बगीचे की तरफ जाओ।"

"क्या हुआ है?"

"पेड़ की एक शाखा गिर गयी है। तुम जाओ। मैं गायों को गौशाला में बांध दूंगा।"

"यह वही बूढ़ा पेड़ होगा।"

हां, यह वही बूढ़ा पेड़ था। लोगों ने पेड़ की शाखा को हटाया और मंगल को उसके नीचे से हटाकर लिटा दिया। उसकी दायीं टांग सूज गयी थी और माथे पर पसीना बह रहा था जिससे लगता था कि उसे बहुत दर्द हो रहा है।

"बाबा, बाबा"।

"इतवा तुम ठीक कहते थे कि यह पेड़ गिरने वाला है। बीड़ी जलाने के

लिए इस डाल की ओर झुका तो यह मेरे ऊपर गिर पड़ी।"

चंद ने कहा, "भगवान का शुक्र है कि शाखा तुम्हारे सीने पर नहीं गिरी"।

"मुझे घर ले चलो।"

लोगों ने हाथों की पालकी सी बनाकर उसे घर पहुंचाया। उनमें से एक आदिवासी डाक्टर शशि लोढा को बुला लाया।

प्रहग्ज सिंह अकसर गांव के रोगियों को इलाज के लिए शहर के अस्पताल ले जाता था। उसने तत्काल अपनी राय दी कि यह मामला शशि लोढा के बस का नहीं है।

"जाओ और मोती बाबू से रबर के टायरों वाली गाड़ी ले आओ।"

"क्या बाबू गाड़ी देंगे?"

"उन्हें देनी चाहिए। मंगल चाचा उनके पास बरसों से काम कर रहे हैं और उनका काम करते हुए ही चोट लगी है।"

मंगल ने अचेत से स्वर में कहा "नहीं, मैं जिंदगी में कभी अस्पताल नहीं गया"।

"चाचा, हर चीज कभी न कभी पहली बार होती है। इस बार मोहिनी का स्वास्थ्य केंद्र इसे ठीक नहीं कर सकता।"

"हमारी शशि बकरियों और गायों की टूटी हड्डियां जोड़ देती है।"

"लेकिन तुम गाय बकरी थोड़े ही हो। तुम्हें इतवा के बारे में भी सोचना चाहिए।"

गुस्से से चंद ने कहा "मोती बाबू का यह पेड़ काटना पड़ेगा। क्या पता यह किसी की जान न ले लें"।

आलोमणि ने इस पेड़ के बारे में बताना चाहा कि इस पर भूत प्रेत रहते हैं लेकिन आदमियों ने उसे चुप करा दिया। मोती बाबू ने थोड़ी आनाकानी करने के बाद गाड़ी दे दी। हालांकि उसने यह भी कहा कि अगर मंगल की जगह उसका पोता इतवा काम पर आता तो यह दुर्घटना नहीं होती। "यह सब मंगल की जिद के कारण हुआ है।" मोती बाबू ने कहा।

मोती बाबू ने कुछ पैसे भी दिये। वे यह बात जानते थे कि पानी में रहकर मगर से बैर नहीं किया जाता। उसे चारों ओर से आदिवासियों ने घेर रखा था। अगर वे नाराज हो जाते तो वे संदेशवाहक द्वारा संदेश दूसरे गांव में भेज देते जो हाथों में साल के पेड़ के गांठदार डंडे रखते और फिर वे मोती बाबू की जमीन पर धनुषबाण से



हमला कर देते। (आदिवासियों में संदेश भेजने की प्रचलित प्रथा के अनुसार साल पेड़ की भीतरी छाल की गांठें बनाते हैं। चार संदेशवाहक चार गांवों में जाते हैं। तीन गांठों का अर्थ है कि घटना तीन दिन बाद होगी। प्रत्येक गांव से संदेशवाहकों को अन्य गांवों में भेजा जाता है और यह क्रम चलता रहता है। इस प्रकार खबर प्रकाश की गति से सब ओर फैलती है) हाल ही में आदिवासी अपना अधिकार मांगना सीख गये हैं। इसलिए मोती बाबू ने अब उन्हें नाराज करना ठीक नहीं समझा।

मंगल की मुख्य चिंता इतवा के बारे में थी। आलोमणि ने उसे दिलासा दिया "हम तुम्हारे पोते और बकरियों की देखभाल करेंगे। हम रोजाना शाम को तुम्हारे घर में दिया जला देंगे। तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं"।

"लड़के को अकेला सोना पड़ेगा।"

"अरे, हम सब हैं तो।"

इतवा ने उनके साथ शहर जाते समय कुछ नहीं कहा। प्रहराज काफी लोगों को जानता था। मंगल को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद उसने डाक्टर से कहा कि अगले दिन उसका एक्स रे कर दिया जाय।

रात को वे सब शंकर सिंह मुंडा के घर सोये। वह शिक्षा विभाग में चपरासी था। उन्होंने एक ढाबे में खाना खाया। ढाबे वाले ने चावल ज्यादा नहीं दिये। इतवा को यहां अच्छा नहीं लग रहा था।

अगले दिन मंगल की एक्स रे रिपोर्ट आयी जिससे पता चला कि उसकी पैर की हड्डी टूटी हुई है और उसकी टांग पर एक माह तक पलस्तर चढ़ा रहेगा। डाक्टर ने बताया कि उसके बाद भी यह पता नहीं कि वह इस टांग से काम कर सकेगा या नहीं। उसने कहा कि यह तो भगवान ही जानता है।

मंगल बोला 'मैं वापस आऊंगा। इतवा, तुम स्कूल जाओगे'।

वापसी यात्रा के दौरान इतवा चुपचाप रहा। इतवा को स्कूल जाना सपना सा लगने लगा। आम की डाल ने मंगल की टांग ही नहीं तोड़ी, इतवा का संसार ही झंझोड़ दिया। रास्ते में प्रहराज ने इतवा के लिए कुछ मिठाई और आम का मुरब्बा खरीदा। वे एक बैलगाड़ी पर चढ़कर गांव आये।

* * *

प्रहराज शहर से खबर लेकर आया कि मंगल को एक माह और अस्पताल में रहना पड़ेगा क्योंकि बूढ़े व्यक्ति की हड्डियां जुड़ने में बहुत समय लेती हैं।

अब मोती बाबू से बचना मुश्किल था। सुबल, चंद, आलोमणि, भैरों सभी ने इतवा को सलाह दी थी कि मोती बाबू की बात मान ले। उन्होंने कहा "फिलहाल काम करो। उसकी बात न मानना पागलपन है। हम जानते हैं कि तुम्हारे बाबा तुम्हें पढ़ाना चाहते हैं। जब वह अस्पताल से वापस आ जाए तो दुबारा स्कूल जाना शुरू कर देना"।

इतवा अब काफी समझदार हो गया था। उसे पता था कि उनके पास एक झोंपड़ी, एक बाड़ा और थोड़ी सी बकरियां ही हैं। यदि वह मोती बाबू के यहां काम करेगा तो कम से कम उन लोगों के साथ रह सकेगा, जो उसकी जान पहचान के हैं।

मोती बाबू उसके निर्णय से बहुत खुश हुए, "अब तुम होशियार हो गये हो, तुम जानते हो कि यदि भगवान चाहता कि तुम पढ़ो तो तुम्हारे बाबा के साथ यह दुर्घटना

नहीं होती"।

इतवा ने कोई जवाब नहीं दिया। दिन-भर काम करने के बाद रात को रतन के साथ पढ़ने बैठा तो वह कुछ याद न कर सका। जब स्कूल खुले तो अध्यापक को उसकी अनुपस्थिति का पता चला। लड़कों ने जो कुछ हुआ सारी बात अध्यापक को बतायी। अध्यापक ने कहा 'मैं उसके पास जाकर देखता हूं कि वह कैसे दिन बिता रहा है"। वह रात को क्लब भी न जा सका क्योंकि बकरियां अकेली रह जातीं।

लेकिन इतवा ने उसकी परवाह नहीं की। उसे डर था कि कहीं वह रो न पड़े लेकिन वह उस समय रोया जब मंगल अस्पताल से आया और उसे एक जोरदार तमाचा मारते हुए कहा, "अच्छा होता अगर मैं मर जाता। तो तुम फिर से ग्वाले बन गये। मैं नहीं चाहता था कि तुम अनपढ़ रहो और बाबुओं के गुलाम रहो। तुमने कटहल के पेड़ क्यों नहीं बेच दिये? तुमने बकरियां क्यों नहीं बेच दीं। तुम मेरे आने तक भूखे क्यों नहीं रहे? तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ी, इतवा"?

"बाबा, बाबू इंतजार नहीं करता। वह किसी और को नौकर रख लेता। और तुम तो इतना काम करने के लायक नहीं रहे हो।"

"क्यों नहीं?"

"तुम्हें लाठी के सहारे चलना पड़ता है। तुम कड़ी मेहनत नहीं कर सकते।"

आलोमणि ने कहा "मंगल दादा, समझदारी से काम लो। इतवा एक दिन अवश्य स्कूल जायेगा। सदा एक सा समय नहीं रहता"। मंगल चुप रहा।

लेकिन अगले दिन वह गया और खजूर के पत्ते तोड़ लाया। खाली क्यों बैठा जाय। आदिवासी आदमी कभी खाली नहीं बैठ सकता। इसलिए वह चटाई बुनेगा।

* * *

इतवा स्कूल नहीं गया। लेकिन वह बाबू के घर उस समय जाता जब रास्ते में अध्यापक विद्यार्थियों को कहानी सुना रहा होता। इतवा को पता था कि अध्यापक शहर से कहानी की किताब लाये थे जैसा कि उन्होंने पहले वादा किया था। वे लड़ाइयों और युद्धों की कहानियां सुना रहे थे।

"हां, एक बार बहुत भयंकर लड़ाई हुई थी। कभी दोनों तरफ से तीर चल रहे थे, कभी एक ओर से तोपें, बंदूकें और दूसरी तरफ तीर चलाये जा रहे थे।"



इतवा भी इन कहानियों को किसी दूसरे को सुनाना चाहता था। उसने आकाश को, जंगली घास को, पानी को आवाज दी और सारी कहानी सुनायी। वह जानता था कि हमेशा से कहीं न कहीं लड़ाइयां चल रही थी। बूढ़ा खरगोश भी तो जिंदा रहने के लिए लड़ता रहता है। किसी आदमी या जानवर की छाया देखते ही उसके कान खड़े हो जाते हैं और वह घने जंगल में खो जाता है। जब इतवा पानी में जाल फैंकता है तो मछलियों का संघर्ष शुरू हो जाता है और वे उससे दूर रहने का प्रयास करती हैं। जंगली फूलों को देखो। मानसून के समय वे सुवर्णरेखा नदी के लाल पानी में छुप जाते हैं और पानी घट जाता है तो बाहर आ जाते हैं। सारा जीवन आक्रमण और बचाव ही तो है।

एक दिन अध्यापक ने उसे पकड़ लिया, "इतवा, भागो मत! सच बताओ तुम स्कूल क्यों नहीं आ रहे"?

"मैं मोती बाबू के यहां काम करता हूं।"

"क्या तुम जानते हो कि पढ़ने आओगे तो तुम्हें वजीफा मिलेगा और दुपहर में नाश्ता भी।"

इतवा खड़ा खड़ा पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदने लगा और साहस करके बोला "तुम रोजाना लड़ाई की बात करते हो। क्या लड़ाई खत्म हो गयी है या चल रही है"।

अध्यापक ने इतवा के सिर पर हाथ रखा और बोला "लड़ाइयां तो बहुत हैं , इतवा"।

"क्या सब खत्म हो गयी हैं?"

"क्यों क्या तुम किसी लड़ाई में जाकर लड़ना चाहते हो?"

"मैं? मैं? सुनो साहब, तुम अपना खाना खुद पकाते हो न। यदि मैं आपको कुछ कंदमूल लाकर दूं तो क्या लोगे? बहुत स्वादिष्ट हैं।"

"तुम पहले स्कूल आओ।"

"बाबा भी चाहते हैं कि मैं स्कूल जाऊं पर उनकी टांग में चोट लग गयी थी। मोती बाबू ने धमकी दी थी कि वे कोई और आदमी रख लेंगे। इसलिए ....और घर में खाने को दाना भी नहीं था।"

"क्या तुम्हारे अन्य दोस्तों के साथ भी यही समस्या है।"

"हां।"

"तुम रात को क्लब में क्यों नहीं आते?"

"मैं दिन भर काम करने के बाद बहुत थक जाता हूं।"

इतवा ने सिर हिलाया और भाग गया। अध्यापक ने देखा कि वह भागता जा रहा है। इतवा भी एक बहादुर सैनिक था। वह भी एक लड़ाई लड़ रहा था। इसका उसे पता नहीं था। आलोमणि अध्यापक के लिए रोजाना पानी लाती थी। अध्यापक ने उससे कहा, "आदिवासी लड़के पढ़ने नहीं आते हैं। सरकार इस स्कूल को बंद कर देगी। बिना छात्रों के क्या कोई स्कूल चल सकता है"?

"बेटे, मुझसे यह सब मत कहो। मैं इनके बारे में कुछ नहीं जानती। मेरे लड़कों ने ग्वालों के रूप में जिंदगी शुरू की और वे खेतीहर मजदूर बनकर रह गये। लेकिन वे जब क्लब में बिरसा मुंडा दिवस मनाने आयें तब उन्हें स्कूल के बारे में बताना।"

"क्या क्लब में सभी आते हैं?"

"हां, यह बैठक क्लब बुलाता है। सबको इसमें आना पड़ता है।"

* * *

अगले दिन इतवा जैसे ही स्कूल से गुजर रहा था, अध्यापक बाहर आया और उसे रोका।

"यहां आओ इतवा। इस तस्वीर को देखो।"

"यह कौन है?"

"बिरसा मुंडा, बिरसा भगवान! क्या तुमने इनके बारे में सुना है?"

"नहीं।"

"क्या तुमने सिधू और कान्हू के बारे में सुना है?"

'हां, सुना है।"

"क्या तुम उनके बारे में अच्छी तरह जानते हो।"

"नहीं।"

"इतवा तुम्हें लड़ाइयों की कहानी पसंद है न। बिरसा, सिधू और कान्हू ये सब बहुत बड़े योद्धा थे। वे सब युद्ध करते हुए मारे गये। अगर तुमने पढ़ना सीखा होता तो तुम इनके बारे में जान गये होते और तुम्हारे मित्रों को इनके बारे में जानकारी होती।"

आज इतवा ने नदी पार की और रेतीले किनारे पर पहुंचा। वहां उसने नृत्य किया। अपने हाथ आकाश की ओर उठाकर उसने नदी, जंगल और चिड़ियों को आवाज दी।

"सुनो, वह बड़ी भारी लड़ाई थी और हमारे लोग बड़ी बहादुरी से लड़े। क्या तुम्हें हमारे बिरसा, सिधू और कान्हू के बारे में पता है? क्या तुमने सुना है?"

दुलंग नदी की लहरें इतवा के शब्दों को सुवर्णरेखा तक ले गयी। क्षितिज पर जैसे रामेश्वर मंदिर इन शब्दों को सुनने के लिए आगे बढ़ा और तितलियां इतवा की कहानी को सुनाने के लिए एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ने लगीं।

"बाबा, तुमने बिरसा भगवान सिधू और कान्हू के बारे में सुना है?"

"मैंने उनका नाम सुना है। पर उनके बारे में नहीं जानता।"

"बाबा, बिरसा भगवान ने क्या किया था?"

"मुझे पता नहीं, बेटे।"

"बाबा, मैं स्कूल जाना चाहता हूं।"

"अब इतने दिन बाद!"

"अब तुम काफी अच्छे हो गये हो। मैं स्कूल से आकर अपने आंगन में मिर्च के पौधे लगाऊंगा और घाट में बेचने जाऊंगा। हम अपनी बूढ़ी बकरी बेचेंगे और नयी खरीद लेंगे। अगर बकरी ने बच्चे दिये तो सोचो हमें कितना फायदा होगा।"

" इतवा, मैं तो यही चाहता था कि तुम पढ़ो, पर तुमने ही पढ़ना छोड़ दिया। देखते हैं दूसरे लोगों का क्या विचार है, पर मैं बाबू को वचन भी दे चुका हूं।"

"तुमने सफेद कागज पर अंगूठा थोड़े ही लगा दिया है।"

"नहीं, लेकिन मैंने उसे काम करने के लिए जुबान दी है। आदिवासी अपने वचन का पक्का होता है।"

"लेकिन अगर मैं काम नहीं करता तो वह दूसरे आदमी को रख लेते। क्या बाबुओं को अपनी जुबान का पक्का नहीं होना चाहिए।"

"मैं तो इतना ही जानता हूं कि आदिवासी को अपनी जुबान का पक्का होना चाहिए। हम अपने नियमों पर चलें और वे अपने पर।"

* * *

बिरसा दिवस ...... 15 नवंबर।

कल इतवा ने मोती बाबू से कहा कि वह काम पर नहीं आयेगा।



"क्यों ?"

"क्योंकि कल बिरसा दिवस है।"

"तो क्या हुआ? वह तो हर साल आता है।"

"इस साल बहुत भीड़ होगी, हमें क्लब को सजाना है।"

"मुझे बेवकूफ मत बनाओ। इतवा, तुम लोग बहुत सिर पर चढ़ते जा रहे हो। समय खराब है इसलिए मैं चुप हूं। लेकिन यह तो हद हो गयी है। बिरसा दिवस ! भारी भीड़! तुम जैसे जंगली लोगों के मुंह से ये शब्द अच्छे नहीं लगते।"

इतवा गुस्से से भर गया। लेकिन मोती बाबू का डर इतना था कि कुछ कहे बिना घर आ गया।

"बाबा क्या हम जंगली हैं?"

"कौन कहता है?"

"मोती बाबू ऐसा क्यों कहते हैं? क्या इसलिए कि हम अनपढ़ हैं, गरीब हैं, काली चमड़ी वाले हैं और मिट्टी की झोंपड़ियों में रहते हैं?"

"तो हम जंगली हैं। क्या वाकई मैं जंगली हूं। अगर हम जंगली उसका काम नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

"अब मैं उसके यहां काम नहीं करूंगा"।

"आओ। चलो नदी पर चलें। कपड़े धोने के सोड़े से अपने कपड़े धोयें। हम कल की सभा में चाहे फटे कपड़े पहनें पर गंदे नहीं पहनने चाहिएं। अपने बालों की तरफ देखो। ऐसा लगता है कौवे का घोंसला है। आओ मैं इन्हें धो दूं।"

अगली सुबह इतवा बहुत खुश हुआ जब उसने भारी भीड़ देखी और जोशीले नारे सुने "बिरसा मुंडा अमर रहे! सिधू, कान्हू अमर रहें"। वह रतन और सिंगराई को वहां देखकर भी बहुत प्रसन्न हुआ।

"क्या बाबू ने तुम्हें आज की छुट्टी दे दी?"

"बाबू से किसने पूछा है? हमें आना था हम आ गये।"

"इस साल तो बहुत ज्यादा भीड़ है!"

"तुम्हें पता है, हमारे अध्यापक अध्यक्ष बने हैं?"

इस वर्ष मंगल, भैरों, सुबल, आलोमणि और भजन सभी मंच पर बैठे हुए थे। प्रहराज लाउडस्पीकर ठीक कर रहा था। वह बैटरी से चलता था। इससे पहले इतनी अधिक तैयारी कभी नहीं हुई थी।

"शांत! शांत!" प्रहराज ने माइक पर आवाज लगायी।

"हमारे अध्यक्ष गंगाराम हैंब्रोम आपसे दो शब्द कहेंगे।"

गंगाराम खड़ा हो गया। वह अच्छे शरीर का और मृदुभाषी था। लेकिन आज वह दबंग और जोशीली आवाज में बोला "हमारे पास हमारे महान वीरों—सिधू और कान्हू की तस्वीरें नहीं हैं जिससे उनके चित्र बनाये जा सकें। लेकिन बिरसा भगवान की है। कृपया आप सब लोग खड़े हो जायें। मैं यह आपको दिखाता हूं। कृपया इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करें। मैं बताता हूं कि इनकी जीवनी आपको हिम्मत और प्रेरणा देगी। आपको अहसास होगा कि गरीब होते हुए भी आप हर बाधा को पार कर सकते हैं"।

क्या चित्र था वह! सफेद कागज पर लकड़ी के कोयले से बना हुआ चित्र बांस की चटाई पर चिपका था। साफे में उनका चेहरा बहुत रौबीला लग रहा था। आंखें मशाल की तरह चमक रही थीं। अचानक भीड़ के बीच से इतवा चिल्लाया, 'बिरसा भगवान! बिरसा भगवान। उन्होंने हमारे लिए जबर्दस्त लड़ाई लड़ी थी।" भीड़ ने भी यही कहा और वहां "जय बिरसा भगवान! जय बिरसा भगवान"! के नारे गूंजने लगे।

इतवा का सीना गर्व से मानो फटा जा रहा था। क्या वाकई आदिवासी जंगली हैं हम

लोग! क्या जंगली लोगों में बिरसा मुंडा जैसा कोई महानायक हुआ था? ऐसे लग रहा था जैसे इतवा खुशी और उल्लास से लंबा हो गया है। नहीं, इतवा जान गया कि वे जंगली नहीं हैं। उनके जीवन को ग्वालों और मजदूरों के जीवन तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इतवा पढ़ेगा और उन सवालों का जवाब ढूंढेगा जो उसे सताते हैं। वे गारे मिट्टी की झोंपड़ियों में ही क्यों रहते हैं? बाबा एक फटी सी धोती में ही क्यों रहते हैं? उसे इन सब बातों के उत्तर चाहिएं। उसका सीना ऐसे हिलोरें ले रहा था जैसे अंदर दुलंग और सुवर्णरिखा नदियां उफन रही हैं।

* * *

ग्वाले के रूप में इतवा के जीवन का यह अंत था। आदिवासी लोगों के नेताओं ने अपने बच्चों को पाठशाला भेजने का रास्ता निकालने का निश्चय किया। अपने क्षेत्र में आदिवासी स्कूल खुलवाने के लिए उन्होंने संघर्ष करने की ठानी। लंबे संघर्ष के बाद उन्हें स्कूल के लिए आदिवासी अध्यापक भी मिल गया। यदि आदिवासी बच्चे स्कूल न जाते तो ये सारे प्रयत्न निरर्थक हो जाते।

मोती बाबू को बड़ा गुस्सा आया, "क्या, कोई ग्वाला काम पर नहीं आयेगा! मैं देखता हूं उनको"।

लेकिन उनके बड़े भाई ने उन्हें समझाया, "तुम क्या कर लोगे? हम केवल छह परिवार हैं जबकि वे सैकड़ों। उनसे विनय करो, आग्रह करो, गुस्सा करने के दिन लद गये"।

हार मानते हुए मोती बाबू उनके पास गये।

"क्या हुआ मंगल?"

"कुछ नहीं हुआ, बाबू।"

"इतवा काम पर नहीं आया, क्या तुम्हें पता नहीं है।"

"इतवा अब काम नहीं करेगा। वह पढ़ने जाने लगा है। उसे वहां किताबें मिलेंगी, कपड़े मिलेंगे, भोजन मिलेगा, वजीफा भी! जब सब कुछ मिल रहा है तो काम पर क्यों आयेगा?"

"पर इस पढ़ने लिखने से उसे क्या मिलेगा? क्या वह राजा बन जायेगा या और कुछ?"

"बाबू, वह इंसान बन जायेगा।"

"यह षड्यंत्र है। लेकिन तुम भी कान खोल कर सुन लो। जब रोपाई और कटाई

का वक्त आयेगा तो मैं तुममें से किसी को भी काम नहीं दूंगा।"

मंगल ने अपना सिर खुजलाया और बोला, "बाबू क्या यह ठीक होगा? हम ऐसा नहीं होने देंगे। हवा बदल गयी है बाबू। जंगली अब एक हो गये हैं"।

मोती बाबू को अपना गुस्सा पीकर घर लौटना पड़ा।



आज स्कूल मास्टर ने इतवा से कंदमूल स्वीकार कर लिये। उसे यह करना भी चाहिए था। क्या अध्यापक अपने प्रिय छात्र से तुच्छ भेंट स्वीकार न करे?

विद्यालय के बाद इतवा नदी के पार गया। वह पीठ के बल रेत पर लेट गया और आकाश से बोला, "तुम्हें पता है कितनी जबर्दस्त लड़ाई थी वह"? नदी, आकाश और घास धूप में चमककर मुस्कुराने लगे। बुद्धू लड़का। इतवा मुंडा नहीं जानता था कि उसकी लड़ाई खत्म हो गयी है और वह जीत चुका है।

तो इस प्रकार इतवा की कहानी पूरी हुई।





रु. 13.00 ISBN 81-237-0529-8

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया